

हिंदी

कक्षा IX

अध्याय 5- शक्र तारे के समान

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1. महादेव भाई अपना परिचय किस रूप में देते थे?

उत्तर-महादेव भाई अपना परिचय गाँधी जी के 'पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर' के रूप में देते थे।

प्रश्न 2. 'यंग इंडिया' साप्ताहिक में लेखों की कमी क्यों रहने लगी थी?

उत्तर-अंग्रेजी संपादक हार्नीमैन 'यंग इंडिया' के लिए लिखते थे, जिन्हें देश निकाले की सजा देकर इंग्लैंड भेज दिया था। इस कारण 'यंग इंडिया' साप्ताहिक में लेखों की कमी रहने लगी।

प्रश्न 3. गांधी जी ने 'यंग इंडिया' प्रकाशित करने के विषय में क्या निश्चय किया?

उत्तर-गाँधी जी ने 'यंग इंडिया' को सप्ताह में दो बार प्रकाशित करने का निश्चय किया।

प्रश्न 4. गांधी जी से मिलने से पहले महादेव भाई कहाँ नौकरी करते थे?

उत्तर-गांधी जी से मिलने से पहले महादेव भाई भारत सरकार के अनुवाद विभाग में नौकरी करते थे।

प्रश्न 5. महादेव भाई के झोलों में क्या भरा रहता था?

उत्तर-महादेव भाई के झोलों में ताजी राजनीतिक घटनाओं, जानकारियों, चर्चाओं से संबंधित पुस्तकें, समाचार पत्र, मासिक पत्र आदि भरे रहते थे।

प्रश्न 6. महादेव भाई ने गांधी जी की कौन-सी प्रसिद्ध पुस्तक का अनुवाद किया था?

उत्तर -महादेव भाई ने गांधी जी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' का अंग्रेजी अनुवाद किया।

प्रश्न 7. अहमदाबाद से कौन-से दो साप्ताहिक निकलते थे?

उत्तर-अहमदाबाद से निकलने वाले साप्ताहिक पत्र थे- 'यंग इंडिया' तथा 'नव जीवन'।

प्रश्न 8. महादेव भाई दिन में कितनी देर काम करते थे?

उत्तर-महादेव भाई लगातार चलने वाली यात्राओं, मुलाकातों, चर्चाओं और बातीचत में अपना समय बिताते थे। इस प्रकार वे 18-20 घंटे तक काम करते थे।

प्रश्न 9. महादेव भाई से गांधी जी की निकटता किस वाक्य से सिद्ध होती है?

उत्तर-महादेव भाई से गाँधी जी की निकटता इस बात से सिद्ध होती है कि वे बाद के सालों में प्यारेलाल को बुलाते हुए 'महादेव' पुकार बैठते थे।

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1. गांधी जी ने महादेव को अपना वारिस कब कहा था?

उत्तर-महादेव भाई 1917 में गांधी के पास पहुँचे। गांधी जी ने उनको पहचानकर उन्हें उत्तराधिकारी का पद सौंपा था। 1919 में जलियाँबाग कांड के समय जब गांधी जी पंजाब जा रहे थे तब उन्हें गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने उसी समय महादेव भाई को अपना वारिस कहा था।

प्रश्न 2. गांधी जी से मिलने आनेवालों के लिए महादेव भाई क्या करते थे?

उत्तर-महादेव भाई पहले उनकी समस्याओं को सुनते थे। उनकी संक्षिप्त टिप्पणी तैयार करके गाँधी जी के सामने पेश करते थे तथा उनसे लोगों की मुलाकात करवाते थे।

प्रश्न 3. महादेव भाई की साहित्यिक देन क्या है?

उत्तर-महादेव भाई ने गांधी जी की गतिविधियों पर टीका-टिप्पणी के अलावा 'सत्य के प्रयोग' का अंग्रेजी अनुवाद किया। इसके अलावा 'चित्रांगदा', 'विदाई का अभिशाप', 'शरद बाबू की कहानियाँ' आदि का अनुवाद उनकी साहित्यिक देन है।

प्रश्न 4. महादेव, भाई की अकाल मृत्यु को कारण क्या था?

उत्तर-महादेव भाई की अकाल मृत्यु को कारण उनकी व्यस्तता तथा विवशता थी। सुबह से शाम तक काम करना और गरमी की ऋतु में ग्यारह मील पैदल चलना ही उनकी मौत का कारण बने।

प्रश्न 5. महादेव भाई के लिखे नोट के विषय में गांधी जी क्या कहते थे?

उत्तर-महादेव भाई के द्वारा लिखित नोट बहुत ही सुंदर और इतने शुद्ध होते थे कि उनमें कॉपी और मात्रा की भूल और छोटी गलती भी नहीं होती थी। गांधी जी दूसरों से कहते कि अपने नोट महादेव भाई के लिखे नोट से ज़रूर मिला लेना।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1. पंजाब में फ़ौजी शासन ने क्या कहर बरसाया?

उत्तर-पंजाब में फ़ौजी शासन ने काफी आतंक मचाया। पंजाब के अधिकतर नेताओं को गिरफ्तार किया गया। उन्हें उम्र कैद की सज़ा देकर काला पानी भेज दिया गया। 1919 में जलियाँवाला बाग में सैकड़ों निर्दोष लोगों को गोलियों से भून दिया गया। 'ट्रिब्यून' के संपादक श्री कालीनाथ राय को 10 साल की जेल की सज़ा दी गई।

प्रश्न 2. महादेव जी के किन गुणों ने उन्हें सबका लाडला बना दिया था?

उत्तर-महादेव भाई गांधी जी के लिए पुत्र के समान थे। वे गांधी का हर काम करने में रुचि लेते थे। गांधी जी के साथ देश भ्रमण तथा विभिन्न गतिविधियों में हिस्सा लेते थे। वे गांधी जी की गतिविधियों पर टिप्पणी करते थे। महादेव जी की लिखावट बहुत सुंदर, स्पष्ट थी। वे इतना शुद्ध लिखते थे कि उसमें मात्रा और कॉमा की भी अशुद्धि नहीं होती थी। वे पत्रों का जवाब जितनी शिष्टता से देते थे, उतनी ही विनम्रता से लोगों से मिलते थे। वे विरोधियों के साथ भी उदार व्यवहार करते थे। उनके इन्हीं गुणों ने उन्हें सभी का लाडला बना दिया।

प्रश्न 3. महादेव जी की लिखावट की क्या विशेषताएँ थीं?

उत्तर-पूर्णतः शुद्ध और सुंदर लेख लिखने में महादेव भाई का भारत भर में कोई सानी नहीं था। वे तेज़ गति से लंबी लिखाई कर सकते थे। उनकी लिखावट में कोई भी गलती नहीं होती थी। लोग टाइप करके लाई 'रचनाओं

को महादेव की रचनाओं से मिलाकर देखते थे। उनके लिखे लेख, टिप्पणियाँ, पत्र और गाँधीजी के व्याख्यान सबके सब ज्यों-के-ज्यों प्रकाशित होते थे।

(ग) निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1. ‘अपना परिचय उनके ‘पीर-बावर्ची-भिशती-खर’ के रूप में देने में वे गौरवान्वित महसूस करते थे।’

उत्तर-आशय-महादेव भाई गांधी जी के निजी सचिव और निकटतम सहयोगी थे। इसके बाद भी उन्हें अभिमान छू तक न गया था। वे गांधी जी के प्रत्येक काम को करने के लिए तैयार रहते थे। वे गांधी जी की प्रत्येक गतिविधि, उनके भोजन और दैनिक कार्यों में सदैव साथ देते थे। वे स्वयं को गांधी का सलाहकार, उनका रसोइया, मसक से पानी ढोने वाला तथा बिना विरोध के गधे के समान काम करने वाला मानते थे।

प्रश्न 2. इस पेशे में आमतौर पर स्याह को सफ़ेद और सफ़ेद को स्याह करना होता था।

उत्तर-महादेव ने गाँधी जी के सान्निध्य में आने से पहले वकालत का काम किया था। इस काम में वकीलों को अपना केस जीतने के लिए सच को झूठ और झूठे को सच बताना पड़ता है। इसलिए कहा गया है कि इस पेशे में स्याह को सफ़ेद और सफ़ेद को स्याह करना होता था।

प्रश्न 3. देश और दुनिया को मुग्ध करके शुक्रतारे की तरह ही अचानक अस्त हो गए।

उत्तर-आशय- नक्षत्र मंडल में करोड़ों तारों के मध्य शुक्रतारा अपनी आभा-प्रभा से सभी का ध्यान अपनी ओर खींच लेता है, भले ही उसका चमक अल्पकाल के लिए हो। यही हाल महादेव भाई देसाई का था। उन्होंने अपने मिलनसार स्वभाव, मृदुभाषिता, अहंकार रहित विनम्र स्वभाव, शुद्ध एवं सुंदर लिखावट तथा लेखक की मनोहारी शैली से सभी का दिल जीत लिया था। अपनी असमय मृत्यु के कारण वे कार्य-व्यवहार से अपनी चमक बिखेर कर अस्त हो गए।

प्रश्न 4. उन पत्रों को देख-देखकर दिल्ली और शिमला में बैठे वाइसराय लंबी साँस-उसाँस लेते रहते थे।

उत्तर-महादेव इतनी शुद्ध और सुंदर भाषा में पत्र लिखते थे कि देखने वालों के मुँह से वाह निकल जाती थी। गाँधी जी के पत्रों का लेखन महादेव करते थे। वे पत्र जब दिल्ली व शिमला में बैठे वाइसराय के पास जाते थे तो वे उनकी सुंदर लिखावट देखकर दंग रह जाते थे।

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. 'इक' प्रत्यय लगाकर शब्दों का निर्माण कीजिए-

1. सप्ताह – साप्ताहिक
2. अर्थ –
3. साहित्य –
4. धर्म –
5. व्यक्ति –
6. मास –
7. राजनीति –
8. वर्ष –

उत्तर-

1. सप्ताह – साप्ताहिक
2. अर्थ – आर्थिक
3. साहित्य – साहित्यिक
4. धर्म – धार्मिक
5. व्यक्ति – वैयक्तिक
6. मास – मासिक
7. राजनीति – राजनैतिक
8. वर्ष – वार्षिक

प्रश्न 2. नीचे दिए गए उपसर्गों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए शब्द बनाइए-

अ, नि, अन, दुर, वि, कु, पर, सु, अधि

उत्तर-

- आर्य – अन + आर्य = अनार्य
- आगत – सु + आगत = स्वागत

- डर – नि + डर = निडर
- आकर्षक – अन + आकर्षक = अनाकर्षक
- क्रय – वि + क्रय = विक्रय
- मार्ग – कु + मार्ग = कुमार्ग
- उपस्थित – अन + उपस्थित = अनुपस्थित
- लोक – पर + लोक = परलोक
- नायक – वि + नायक = विनायक
- भाग्य – दुर + भाग्य = दुर्भाग्य

प्रश्न 3. निम्नलिखित मुहावरों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

आड़े हाथों लेना, दाँतों तले अंगुली दबाना, लोहे के चने चबाना, अस्त हो जाना, मंत्रमुग्ध करना।

उत्तर-

मुहावरे – वाक्य प्रयोग

आड़े हाथों लेना – देर से घर आने पर पिता ने पुत्र को आड़े हाथों लिया।

दाँतों तले अँगुली दबाना – लक्ष्मीबाई का रण कौशल देख अंग्रेज़ों ने दाँतों तले अँगुली दबा ली।

लोहे के चने चबाना – इस रेगिस्तान को हरा-भरा बनाना लोहे के चने चबाने जैसा है।

अस्त हो जाना – अपनी प्रतिभा की चमक दिखाकर महादेव भाई असमय अस्त हो गए।

मंत्रमुग्ध करना – सुमन के बुने स्वेटर की बुनाई मुझे मंत्रमुग्ध कर रही है।

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों के पर्याय लिखिए-

1. वारिस –
2. जिगरी –
3. कहर –
4. मुकाम –
5. रूबरू –
6. फ़र्क –
7. तालीम –
8. गिरफ्तार –

उत्तर-

1. वारिस – उत्तराधिकारी
2. जिगरी – घनिष्ठ, पक्का
3. कहर – घोर मुसीबत
4. मुकाम – लक्ष्य, मंजिल
5. रूबरू – आमने-सामने
6. फ़र्क – अंतर
7. तालीम – शिक्षा
8. गिरफ्तार – कैद, बंदी

प्रश्न 5. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए-

उदाहरण : गांधी जी ने महादेव भाई को अपना वारिस कहा था।

गांधी जी महादेव भाई को अपना वारिस कहा करते थे।

1. महादेव भाई अपना परिचय 'पीर-बावर्ची-भिशती-खर' के रूप में देते थे।
2. पीड़ितों के दल-के-दल गामदेवी के मणिभवन पर उमड़ते रहते थे।
3. दोनों साप्ताहिक अहमदाबाद से निकलते थे।
4. देश-विदेश के समाचार-पत्र गांधी जी की गतिविधियों पर टीका-टिप्पणी करते थे।
5. गांधी जी के पत्र हमेशा महादेव की लिखावट में जाते थे।

उत्तर-

1. महादेव भाई अपना परिचय पीर-बावर्ची-भिशती-खर' के रूप में दिया करते थे।
2. पीड़ितों के दल-के-दल गामदेवी के भवन पर उमड़ा करते थे।
3. दोनों साप्ताहिक अहमदाबाद से निकला करते थे।
4. देश-विदेश के समाचार-पत्र गांधी जी की गतिविधियों पर टीका-टिप्पणी किया करते थे।
5. गांधी जी के पत्र हमेशा महादेव की लिखावट में जाया करते थे।

योग्यता-विस्तार

प्रश्न 1. गांधी जी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' को पुस्तकालय से लेकर पढ़िए।

उत्तर-विद्यार्थी स्वयं करें।

प्रश्न 2. जलियाँवाला बाग में कौन-सी घटना हुई थी? जानकारी एकत्रित कीजिए।

उत्तर-देश को स्वतंत्रता दिलाने के प्रयास में जलियाँवाला बाग में एक आम सभा आयोजित की गई थी। इसमें हजारों लोग शामिल हुए। इस सभा में बच्चे, बूढ़े, नवयुवक, स्त्री-पुरुष ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। लोग शांतिपूर्वक सभा कर रहे थे, तभी जनरल डायर ने उपस्थित जनसमूह पर गोली चलाने का निर्देश दे दिया। इस नरसंहार में हजारों लोग मारे गए। इस दिन को भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में काले दिन के रूप में जाना जाता है। इससे देश में अंग्रेजों के प्रति घृणा तथा स्वतंत्रता प्राप्ति की ललक और प्रगाढ़ हो उठी।

प्रश्न 3. अहमदाबाद में बापू के आश्रम के विषय में चित्रात्मक जानकारी एकत्र कीजिए।

उत्तर-छात्र स्वयं करें।

प्रश्न 4. सूर्योदय के 2-3 घंटे पहले पूर्व दिशा में या सूर्यास्त के 2-3 घंटे बाद पश्चिम दिशा में एक खूब चमकाता हुआ ग्रह दिखाई देता है, वह शुक्र ग्रह है। छोटी दूरबीन से इसकी बदलती हुई कलाएँ देखी जा सकती हैं, जैसे चंद्रमा की कलाएँ।

उत्तर-छात्र शुक्र ग्रह को देखकर इसकी कलाएँ स्वयं देखें।

प्रश्न 5. वीराने में जहाँ बत्तियाँ न हों वहाँ अँधेरी रात में जब आकाश में चाँद भी दिखाई न दे रहा हो तब शुक्र ग्रह (जिसे हम शुक्र तारा भी कहते हैं) के प्रकाश से अपने साए को चलते हुए देखा जा सकता है। कभी अवसर मिले तो इसे स्वयं अनुभव करके देखिए।

उत्तर-छात्र स्वयं ऐसा अनूठा अनुभव करें।

अध्याय 5- शक्र तारे के समान

परियोजना कार्य

प्रश्न 1. सूर्यमंडल में नौ ग्रह हैं। शुक्र सूर्य से क्रमशः दूरी के अनुसार दूसरा ग्रह है और पृथ्वी तीसरा। चित्र सहित परियोजना पुस्तिका में अन्य ग्रहों के क्रम लिखिए।

उत्तर- छात्र स्वयं करें।

प्रश्न 2. 'स्वतंत्रता आंदोलन में गांधी जी का योगदान' विषय पर कक्षा में परिचर्चा आयोजित कीजिए।

उत्तर- छात्र उक्त विषय पर स्वयं परिचर्चा का आयोजन करें।

प्रश्न 3. भारत के मानचित्र पर निम्न स्थानों को दर्शाएँ-

अहमदाबाद, जलियाँवाला बाग (अमृतसर), कालापानी (अंडमान), दिल्ली, शिमला, बिहार, उत्तर प्रदेश।

उत्तर-



अन्य पाठेतर हल प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. महादेव भाई अपना परिचय 'पीर-बावर्ची-भिशती-खर' के रूप में देते थे।

उत्तर-महादेव भाई अपना परिचय 'पीर-बावर्ची-भिशती-खर' के रूप में दिया करते थे।

प्रश्न 2. पीड़ितों के दल-के-दल गामदेवी के मणिभवन पर उमड़ते रहते थे।

उत्तर-पीड़ितों के दल-के-दल गामदेवी की भवन पर उमड़ा करते थे।

प्रश्न 3. दोनों साप्ताहिक अहमदाबाद से निकलते थे।

उत्तर-दोनों साप्ताहिक अहमदाबाद से निकला करते थे।

प्रश्न 4. देश-विदेश के समाचार-पत्र गांधी जी की गतिविधियों पर टीका-टिप्पणी करते थे।

उत्तर-देश-विदेश के समाचार-पत्र गांधी जी की गतिविधियों पर टीका-टिप्पणी किया करते थे।

प्रश्न 5. गांधी जी के पत्र हमेशा महादेव की लिखावट में जाते थे।

उत्तर-गांधी जी के पत्र हमेशा महादेव की लिखावट में जाया करते थे।

प्रश्न 6. मणिभवन पर लोग क्यों आया करते थे?

उत्तर-अंग्रेजों के जुल्म और अत्याचार के बारे में बताने वाले पीड़ित लोग गामदेवी के मणिभवन पर आते थे और महादेव जी के माध्यम से गांधी जी को अपनी व्यथा बताते थे।

प्रश्न 7. हार्नीमैन कौन थे? उन्हें क्या सज़ा मिली?

अध्याय 5- शक्र तारे के समान

उत्तर-हार्नीमैन 'क्रानिकल' नामक साप्ताहिक समाचार पत्र के निडर अंग्रेज़ संपादक थे। अंग्रेज़ सरकार ने उनके लेखन से रुष्ट होकर देश निकाले की सज़ा देकर इंग्लैंड भेज दिया।

प्रश्न 8.समय का अभाव होने पर भी महादेव भाई ने किस प्रकार साहित्यिक योगदान दिया?

उत्तर-महादेवभाई के भाई के पास समय का नितांत अभाव रहता था फिर भी उन्होंने 'चित्रांगदा', कच देवयानी की कथा पर टैगोर द्वारा रचित 'विदाई का अभिशाप' शीर्षक नाटिका, 'शरदबाबू की कहानियाँ' आदि का अनुवाद करके अपना साहित्यिक योगदान दिया।

प्रश्न 9.नरहरिभाई कौन थे?

उत्तर-नरहरिभाई महादेव जी के जिगरी दोस्त थे। दोनों ने एक साथ वकालत की पढ़ाई की और साथ-साथ अहमदाबाद में वकालत भी शुरू की।

प्रश्न 10.महादेव जी की अकाल मृत्यु का प्रमुख कारण क्या था?

उत्तर-महादेव जी की अकाल मृत्यु का कारण था-मगनवाड़ी से वर्धा की असह्य गरमी में पैदल चलकर सेवाग्राम पहुँचना और वहाँ काम करना। आते-जाते उन्हें ग्यारह मील की दूरी तय करनी होती थी। उन्हें लंबे समय तक वहाँ आना-जाना पड़ा था।

प्रश्न 11.महादेव भाई स्वयं को गांधी जी का 'पीर-बावर्ची-भिशती-खर' क्यों कहते थे?

उत्तर-महादेव भाई गांधी जी के निजी सचिव थे। वे गांधी जी के साथ रहकर उनके भोजन का ध्यान रखते थे तथा गांधी जी के काम को करते हुए उनकी राजनैतिक गतिविधियों का विवरण समाचार-पत्रों को भेजते थे। इसलिए वे स्वयं को 'पीर बावर्ची-भिशती-खर' कहते थे।

प्रश्न 12.गांधी जी ने महादेव भाई को अपने उत्तराधिकारी का पद कब सौंपा?

उत्तर-महादेव भाई जब 1917 में गांधी जी के पास आए तभी गांधी जी ने उनकी अद्भुत प्रतिभा को पहचान लिया और उन्हें अपने उत्तराधिकारी का पद सौंप दिया।

अध्याय 5- शक्र तारे के समान

प्रश्न 13. गांधी जी से पहले 'यंग इंडिया' का संपादन कौन करते थे?

उत्तर- 'यंग इंडिया' का संपादन जब गांधी जी के हाथ आया, उससे पहले मुंबई (बंबई) में तीन नेता थे- शंकर लाल बैंकर, उम्मेर सोबानी और जमनादास द्वारकादास, ये तीनों लोग 'यंग इंडिया' का संपादन करते थे।

प्रश्न 14. गांधी जी के पास किनके-किनके पत्र आते थे?

उत्तर- गांधी जी के पास सभी प्रांतों के उग्र और उदार देश भक्तों, क्रांतिकारियों, देश-विदेश के सुप्रसिद्ध जाने-माने लोगों, संवाददाताओं आदि के पत्र आते थे, जिनकी चर्चा गांधी जी 'यंग इंडिया' के कालमों में करते थे।

प्रश्न 15. महादेव की लिखावट के बारे में सिविलियन और गवर्नर की क्या राय थी?

उत्तर- महादेव भाई की सुंदर और त्रुटिहीन लिखावट देख बड़े-बड़े सिविलियन और गवर्नर की राय यह थी कि सारी ब्रिटिश सर्विसों में महादेव के समान अक्षर लिखने वाला खोजने पर भी नहीं मिलता।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. लेखक ने महादेव के स्वभाव की तुलना किससे की है और क्यों?

उत्तर- लेखक ने महादेव के स्वभाव की तुलना उत्तर प्रदेश और बिहार में हजारों मील तक दूर-दूर गंगा-यमुना के समतल मैदानों से की है क्योंकि जिस प्रकार इन मैदानों में चलने से ठेस नहीं लगती, उसी प्रकार महादेव से मिलने वाले को प्रेम और अपनत्व की अनुभूति होती थी। महादेव के साथ हुई मुलाकात में लोगों को सहृदयता, विनम्रता होती थी। जैसे गंगा के मैदानी भागों में 'कंकरी' तक नहीं मिलती थी। उसी प्रकार महादेव के स्वभाव से किसी को ठेस नहीं पहुँचती थी।

प्रश्न 2. गांधी जी यंग इंडिया के संपादक किस प्रकार बने?

उत्तर- शंकर लाल बैंकर, उम्मेर सोबानी और जमनादास द्वारकादास-ये तीनों नेता मिलकर 'यंग इंडिया' नामक साप्ताहिक पत्र निकालते थे। इस अंग्रेजी साप्ताहिक में लेखन का मुख्य कार्य हार्नीमैन करते थे, जिन्हें काले पानी की सजा देकर इंग्लैंड भेजा जा चुका था। साप्ताहिक के लिए लेख की कमी होने पर ये नेता गांधी जी के पास आए और उनसे 'यंग इंडिया' का संपादक बनने का अनुरोध किया। गांधी जी उनका अनुरोध कर 'यंग इंडिया' के संपादक बन गए।

प्रश्न 3. काम में रात और दिन के बीच महादेव के लिए शायद ही कोई फर्क रहा हो-कथन के आलोक में उनकी व्यस्त जीवन शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-महादेव भाई समाचार-पत्र, मासिक-पत्र और पुस्तकें पढ़ते तथा 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' के लिए लेख लिखते। वे गांधी जी के साथ लगातार चलने वाली यात्राएँ करते। वे हर स्टेशन पर उपस्थित जनता का विशाल समुदाय, जगह-जगह आयोजित सभाएँ, लोगों से मुलाकातें, बैठकें और बातचीत करते। इनके बीच वे अपने लिए भी मुश्किल से समय निकाल पाते। इस प्रकार काम में उनके लिए दिन-रात बराबर था।

प्रश्न 4. महादेव भाई के चरित्र से आप कौन-कौन से मूल्य अपनाना चाहेंगे?

उत्तर-महादेव भाई के चरित्र में एक नहीं बहुत से मानवीय मूल्यों का संगम था जो उन्हें दूसरों से अलग तथा जन-जन के बीच लोकप्रिय बनाए हुए था। उनके चरित्र से समय का नियोजन कर हर काम समय पर करने का गुण, अपने स्वभाव में नम्रता-विनम्रता, सहनशीलता, उदारता जैसे मानवीय मूल्यों को अपनाना चाहूँगा। इसके अलावा देश-प्रेम की भावना तथा सेवा भावना जैसे मूल्य भी अपनाना चाहूँगा।

शुक्रतारे के समान पाठ व्याख्या

पाठ – आकाश के तारों में शुक्र की कोई जोड़ नहीं। शुक्र चंद्र का साथी माना गया है। उसकी आभा-प्रभा का वर्णन करने में संसार के कवि थके नहीं। फिर भी नक्षत्र मंडल में कलगी-रूप इस तेजस्वी तारे को दुनिया या तो ऐन शाम के समय, बड़े सवेरे घंटे-दो घंटे से अधिक देख नहीं पाती।

इसी तरह भाई महादेव जी आधुनिक भारत की स्वतंत्रता के उषाकाल में अपनी वैसी ही आभा से हमारे आकाश को जगमगाकर, देश और दुनिया को मुग्ध करके, शुक्रतारे की तरह ही अचानक अस्त हो गए।

सेवार्थ का पालन करने के लिए इस धरती पर जन्मे स्वर्गीय महादेव देसाई गांधीजी के मंत्री थे। मित्रों के बीच विनोद में अपने को गांधीजी का 'हम्माल' कहने में और कभी-कभी अपना परिचय उनके 'पीर-बावर्ची-भिशती-खर' के रूप में देने में वे गौरव का अनुभव किया करते थे।

शब्दार्थ

आभा-प्रभा – चमक

नक्षत्र मंडल – तारा समूह

विनोद – मज़ाक

हम्माल – बोझ उठाने वाला, कुली

पीर – महात्मा, सिद्ध

बावर्ची – खाना पकानेवाला, रसोइया

भिश्ती – मशक से पानी ढोनेवाला व्यक्ति

खर – गधा, घास

व्याख्या – लेखक कहता है कि आकाश के तारों में शुक्र का कोई जोड़ नहीं है कहने का तात्पर्य यह है कि शुक्र तारा सबसे अनोखा है। शुक्र तारे को चन्द्रमा का साथी माना गया है। चन्द्रमा की चमक का वर्णन करने में संसार के कवि थकते नहीं, वे तरह-तरह से उसकी चमक का वर्णन करते रहे हैं।

लेखक महादेव जी की तुलना शुक्र तारे के साथ करते हुए कहते हैं कि वे भी शुक्र तारे की तरह थोड़ी देर के लिए इस संसार रूपी आकाश को अपने सेवा भाव से चमका कर शुक्र तारे की तरह ही अचानक अस्त हो गए अर्थात् उनका निधन हो गया।

लेखक यह भी कहता है कि सेवा-धर्म का पालन करने के लिए इस धरती पर जन्मे स्वर्गीय महादेव देसाई गांधीजी के मंत्री थे। मित्रों के बीच मज़ाक में अपने को गांधीजी का कुली कहने में और कभी-कभी अपना परिचय उनके खाना पकाने वाले, मशक से पानी ढोने वाले व्यक्ति अथवा गधे के रूप में देने में भी वे गौरव का अनुभव किया करते थे।

पाठ – गांधीजी के लिए वे पुत्र से भी अधिक थे। जब सन् 1917 में वे गांधीजी के पास पहुँचे थे, तभी गांधीजी ने उनको तत्काल पहचान लिया और उनको अपने उत्तराधिकारी का पद सौंप दिया।

सन् 1919 में जलियाँवाला बाग के हत्याकांड के दिनों में पंजाब जाते हुए गांधीजी को पलवल स्टेशन पर गिरफ़्तार किया गया था। गांधीजी ने उसी समय महादेव भाई को अपना वारिस कहा था। सन् 1929 में महादेव भाई आसेतुहिमाचल, देश के चारों कोनों में, समूचे देश के दुलारे बन चुके थे।

इसी बीच पंजाब में फौजी शासन के कारण जो कहर बरसाया गया था, उसका ब्योरा रोज़-रोज़ आने लगा। पंजाब के अधिकतर नेताओं को गिरफ़्तार करके फौजी कानून के तहत जन्म-कैद की सज़ाएँ देकर कालापानी भेज दिया गया। लाहौर के मुख्य राष्ट्रीय अंग्रेज़ी दैनिक पत्र 'ट्रिब्यून' के संपादक श्री कालीनाथ राय को 10 साल की जेल की सज़ा मिली।

शब्दार्थ –

आसेतुहिमाचल – सेतुबंध रामेश्वर से हिमाचल तक विस्तीर्ण

व्याख्या – लेखक कहता है कि गांधीजी के लिए महादेव पुत्र से भी अधिक थे। जब सन् 1917 में महादेव गांधीजी के पास पहुँचे थे, तभी गांधीजी ने उनको तत्काल पहचान लिया और उनको अपने उत्तराधिकारी का पद सौंप दिया।

लेखक कहता है कि सन् 1919 में जलियाँवाला बाग के हत्याकांड के दिनों में पंजाब जाते हुए गांधीजी को पलवल स्टेशन पर गिरफ़्तार किया गया था। गांधीजी ने उसी समय महादेव भाई को अपना वारिस कहा था। लेखक कहता है कि सन् 1929 में महादेव भाई सेतुबंध रामेश्वर से हिमाचल तक देश के चारों कोनों में, पूरे देश के दुलारे बन चुके थे। सभी उनसे प्यार व अपनापन रखने लगे थे। लेखक कहता है कि इसी बीच पंजाब में

फौजी शासन के कारण जो कहर बरसाया गया था, उसके बारे में खबरें रोज़-रोज़ आने लगी थी। पंजाब के ज्यादातर नेताओं को गिरफ़्तार करके फौजी कानून के तहत उम्र-कैद की सज़ाएँ देकर कालापानी भेज दिया गया। लाहौर के मुख्य राष्ट्रीय अंग्रेज़ी दैनिक पत्र 'ट्रिब्यून' के संपादक श्री कालीनाथ राय को 10 साल की जेल की सज़ा मिली।

पाठ – गांधीजी के सामने जुल्मों और अत्याचारों की कहानियाँ पेश करने के लिए आने वाले पीड़ितों के दल-के-दल गामदेवी के मणिभवन पर उमड़ते रहते थे। महादेव उनकी बातों की संक्षिप्त टिप्पणियाँ तैयार करके उनको गांधीजी के सामने पेश करते थे,

और आने वालों के साथ उनकी रूबरू मुलाकातें भी करवाते थे। गांधीजी बंबई के मुख्य राष्ट्रीय अंग्रेज़ी दैनिक 'बाम्बे क्रानिकल' में इन सब विषयों पर लेख लिखा करते थे। क्रानिकल में जगह की तंगी बनी रहती थी। कुछ ही दिनों में 'क्रानिकल' के निडर अंग्रेज़ संपादक हार्नीमैन को सरकार ने देश-निकाले की सज़ा देकर इंग्लैंड भेज दिया। उन दिनों बंबई के तीन नए नेता थे। शंकर लाल बैकर, उमर सोबानी और जमनादास द्वारकादास। इनमें अंतिम श्रीमती बेसेंट के अनुयायी थे।

ये नेता 'यंग इंडिया' नाम का एक अंग्रेज़ी साप्ताहिक भी निकालते थे। लेकिन उसमें 'क्रानिकल' वाले हार्नीमैन ही मुख्य रूप से लिखते थे। उनको देश निकाला मिलने के बाद इन लोगों को हर हफ़ते साप्ताहिक के लिए लिखने वालों की कमी रहने लगी।

ये तीनों नेता गांधीजी के परम प्रशंसक थे और उनके सत्याग्रह-आंदोलन में बंबई के बेजोड़ नेता भी थे। इन्होंने गांधीजी से विनती की कि वे 'यंग इंडिया' के संपादक बन जाएँ। गांधीजी को तो इसकी सख्त ज़रूरत थी ही। उन्होंने विनती तुरंत स्वीकार कर ली।

गांधीजी का काम इतना बढ़ गया कि साप्ताहिक पत्र भी कम पड़ने लगा। गांधीजी ने 'यंग इंडिया' को हफ़ते में दो बार प्रकाशित करने का निश्चय किया। हर रोज़ का पत्र-व्यवहार और मुलाकातें, आम सभाएँ आदि कामों के अलावा 'यंग इंडिया' साप्ताहिक में छापने के लेख, टिप्पणियाँ, पंजाब के मामलों का सारसंक्षेप और गांधीजी के लेख यह सारी सामग्री हम तीन दिन में तैयार करते।

शब्दार्थ

रूबरू – आमने-सामने

व्याख्या – लेखक कहता है कि गांधीजी के सामने जुल्मों और अत्याचारों की कहानियाँ पेश करने के लिए आने वाले पीड़ितों के दल-के-दल गामदेवी के मणिभवन पर इकट्ठे आते रहते थे। महादेव उनकी बातों को विस्तार से सुनकर छोटे रूप में तैयार करके उनको गांधीजी के सामने पेश करते थे और आने वालों के साथ गांधीजी की आमने-सामने मुलाकातें भी करवाते थे।

लेखक कहता है कि गांधीजी मुंबई के मुख्य राष्ट्रीय अंग्रेज़ी दैनिक 'बाम्बे क्रानिकल' में इन सब विषयों पर लेख लिखा करते थे। क्रानिकल में लोग काफी लेख लिखा करते थे जिस कारण उसमें जगह की तंगी बनी रहती थी।

लेखक कहता है कि कुछ ही दिनों में 'क्रानिकल' के निडर अंग्रेज़ संपादक हार्नीमैन को सरकार ने देश-निकाले की सज़ा देकर इंग्लैंड भेज दिया।

क्योंकि वह सभी के लेखों को निडरता से छापा करता था चाहे कोई लेख अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध ही क्यों न हो। लेखक कहता है कि शंकर लाल बैकर, उम्मर सोबानी और जमनादास द्वारकादास उन दिनों बंबई के तीन नए नेता थे।

इनमें अंतिम जमनादास द्वारकादास श्रीमती बेसेंट के अनुयायी थे। ये नेता 'यंग इंडिया' नाम का एक अंग्रेज़ी पत्रिका भी निकालते थे।

ये पत्रिका सप्ताह में एक बार निकाली जाती थी। लेकिन उसमें 'क्रानिकल' वाले हार्नीमैन ही मुख्य रूप से लिखते थे। उनको देश निकाला मिलने के बाद इन लोगों को हर हफ्ते साप्ताहिक के लिए लिखने वालों की कमी रहने लगी।

क्योंकि अब कुछ लोगों के लेखों को छापा ही नहीं जाता था। शंकर लाल बैकर, उम्मर सोबानी और जमनादास द्वारकादास तीनों नेता गांधीजी को बहुत मानते थे और उनके सत्याग्रह-आंदोलन में मुंबई के बेजोड़ नेता भी थे। जो पुरे आंदोलन के दौरान गांधीजी के साथ ही रहे। इन्होंने गांधीजी से विनती की कि वे 'यंग इंडिया' के संपादक बन जाएँ। गांधीजी को तो इसकी सख्त ज़रूरत थी ही।

उन्होंने विनती तुरंत स्वीकार कर ली। लेखक कहता है कि गांधीजी का काम इतना बढ़ गया कि साप्ताहिक पत्र भी कम पड़ने लगा। इसी कारण गांधीजी ने 'यंग इंडिया' को हफ्ते में दो बार प्रकाशित करने का निश्चय किया। हर रोज़ का पत्र-व्यवहार और मुलाकातें, आम सभाएँ आदि कामों के अलावा 'यंग इंडिया' साप्ताहिक में छापने के लेख, टिप्पणियाँ, पंजाब के मामलों का सार-संक्षेप और गांधीजी के लेख यह सारी सामग्री तीन दिन में तैयार करते।

पाठ – 'यंग इंडिया' के पीछे-पीछे 'नवजीवन' भी गांधीजी के पास आया और दोनों साप्ताहिक अहमदाबाद से निकलने लगे। छह महीनों के लिए मैं भी साबरमती आश्रम में रहने पहुँचा। शुरू में ग्राहकों के हिसाब-किताब की और साप्ताहिकों को डाक में डलवाने की व्यवस्था मेरे जिम्मे रही।

लेकिन कुछ ही दिनों के बाद संपादन सहित दोनों साप्ताहिकों की और छापाखाने की सारी व्यवस्था मेरे जिम्मे आ गई। गांधीजी और महादेव का सारा समय देश भ्रमण में बीतने लगा। ये जहाँ भी होते, वहाँ से कामों और कार्यक्रमों की भारी भीड़ के बीच भी समय निकालकर लेख लिखते और भेजते।

सब प्रांतों के उग्र और उदार देशभक्त, क्रांतिकारी और देश-विदेश के धुरंधर लोग, संवाददाता आदि गांधीजी को पत्र लिखते और गांधीजी 'यंग इंडिया' के कॉलमों में उनकी चर्चा किया करते। महादेव गांधीजी की यात्राओं के और प्रतिदिन की उनकी गतिविधियों के साप्ताहिक विवरण भेजा करते।

इसके अलावा महादेव, देश-विदेश के अग्रगण्य समाचार-पत्र, जो आँखों में तेल डालकर गांधीजी की प्रतिदिन की गतिविधियों को देखा करते थे और उन पर बराबर टीका-टिप्पणी करते रहते थे, उनको आड़े हाथों लेने वाले

लेख भी समय-समय पर लिखा करते थे।

बेजोड़ काँलम, भरपूर चैकसाई, ऊँचे-से-ऊँचे ब्रिटिश समाचार-पत्रों की परंपराओं को अपनाकर चलने का गांधीजी का आग्रह और कट्टर से कट्टर विरोधियों के साथ भी पूरी-पूरी सत्यनिष्ठा में से उत्पन्न होने वाली विनय-विवेक-युक्त विवाद करने की गांधीजी की तालीम इन सब गुणों ने तीव्र मतभेदों और विरोधी प्रचार के बीच भी देश-विदेश के सारे समाचार-पत्रों की दुनिया में और एंग्लो-इंडियन समाचार-पत्रों के बीच भी व्यक्तिगत रूप से एम.डी. को सबका लाडला बना दिया था।

शब्दार्थ

तालीम – शिक्षा

व्याख्या – लेखक कहता है कि 'यंग इंडिया' की सफलता को देखते हुए 'नवजीवन' के संपादक भी गांधीजी के पास आए और दोनों पत्रिकाएँ अहमदाबाद से साप्ताहिक निकलने लगे। लेखक कहता है कि छह महीनों के लिए वह भी साबरमती आश्रम में रहने पहुँचे।

शुरू में ग्राहकों के हिसाब-किताब की और साप्ताहिकों को डाक में डलवाने की व्यवस्था लेखक के जिम्मे रही। लेकिन कुछ ही दिनों के बाद संपादन सहित दोनों साप्ताहिकों की और छापाखाने की सारी व्यवस्था लेखक के जिम्मे आ गई। लेखक कहता है कि गांधीजी और महादेव का सारा समय देश घूमने में बीतने लगा।

गांधीजी और महादेव जहाँ भी होते, वहाँ से कामों और कार्यक्रमों की भारी भीड़ के बीच भी समय निकालकर लेख लिखते और भेजते थे। लेखक कहता है कि सब प्रांतों के उग्र और उदार देशभक्त, क्रांतिकारी और देश-विदेश के उत्तम गुणों से युक्त लोग, संवाददाता आदि गांधीजी को पत्र लिखते और गांधीजी 'यंग इंडिया' में उनकी चर्चा किया करते थे।

लेखक कहता है कि महादेव गांधीजी की सारी यात्राओं के और प्रतिदिन की उनकी गतिविधियों के साप्ताहिक विवरण भेजा करते। इसके अलावा महादेव, देश-विदेश के मुख्य समाचार-पत्र, जो आँखों में तेल डालकर गांधीजी की प्रतिदिन की गतिविधियों पर नज़र बनाए रखते थे और उन पर बराबर टीका-टिप्पणी करते रहते थे, महादेव उनको आड़े हाथों लेने वाले लेख भी समय-समय पर लिखा करते थे।

लेखक कहता है कि भरपूर चौकसाई, ऊँचे-से-ऊँचे ब्रिटिश समाचार-पत्रों की परंपराओं को अपनाकर चलने का गांधीजी का आग्रह और कट्टर से कट्टर विरोधियों के साथ भी पूरी-पूरी सत्यनिष्ठा में से उत्पन्न होने वाली विनय-विवेक-युक्त विवाद करने की गांधीजी की शिक्षा इन सब गुणों ने तीव्र मतभेदों और विरोधी प्रचार के बीच भी देश-विदेश के सारे समाचार-पत्रों की दुनिया में और एंग्लो-इंडियन समाचार-पत्रों के बीच भी व्यक्तिगत रूप से महादेव को सबका लाडला बना दिया था। क्योंकि महादेव ने सभी कामों को बड़े सही ढंग से सम्भाल रखा था।

पाठ – गांधीजी के पास आने के पहले अपनी विद्यार्थी अवस्था में महादेव ने सरकार के अनुवाद-विभाग में नौकरी की थी। नरहरि भाई उनके जिगरी दोस्त थे। दोनों एक साथ वकालत पढ़े थे। दोनों ने अहमदाबाद में वकालत भी साथ-साथ ही शुरू की थी।

इस पेशे में आमतौर पर स्याह को सफेद और सफेद को स्याह करना होता है। साहित्य और संस्कार के साथ इसका कोई संबंध नहीं रहता। लेकिन इन दोनों ने तो उसी समय से टैगोर, शरदचंद्र आदि के साहित्य को उलटना-पुलटना शुरू कर दिया था।

‘चित्रांगदा’ कच-देवयानी की कथा पर टैगोर द्वारा रचित ‘विदाई का अभिशाप’ शीर्षक नाटिका, ‘शरद बाबू की कहानियाँ’ आदि अनुवाद उस समय की उनकी साहित्यिक गतिविधियों की देन हैं।

भारत में उनके अक्षरों का कोई सानी नहीं था। वाइसराय के नाम जाने वाले गांधीजी के पत्र हमेशा महादेव की लिखावट में जाते थे। उन पत्रों को देख-देखकर दिल्ली और शिमला में बैठे वाइसराय लंबी साँस-उसाँस लेते रहते थे।

भले ही उन दिनों ब्रिटिश सल्तनत पर कहीं सूरज न डूबता हो, लेकिन उस सल्तनत के ‘छोटे’ बादशाह को भी गांधीजी के सेक्रेटरी के समान खुशनवीश (सुन्दर अक्षर लिखने वाला लेखक) कहाँ मिलता था? बड़े-बड़े सिविलियन और गवर्नर कहा करते थे

कि सारी ब्रिटिश सर्विसों में महादेव के समान अक्षर लिखने वाला कहीं खोजने पर भी मिलता नहीं था। पढ़ने वाले को मंत्रमुग्ध करने वाला शुद्ध और सुंदर लेखन।

शब्दार्थ

जिगरी दोस्त – घनिष्ठ मित्र

व्याख्या – लेखक कहता है कि गांधीजी के पास आने के पहले महादेव ने -अपने विद्यार्थी जीवन में सरकार के अनुवाद-विभाग में नौकरी की थी। नरहरि भाई उनके घनिष्ठ मित्र थे। दोनों ने एक साथ वकालत की पढ़ाई की थी। दोनों ने अहमदाबाद में वकालत भी साथ-साथ ही शुरू की थी।

लेखक कहता है कि वकालत के पेशे में आमतौर पर काले को सफेद और सफेद को काला करना होता है। कहने का तात्पर्य है कि वकालत ने झूठ को सच और सच को झूठ करना होता है। साहित्य और संस्कार के साथ इसका कोई संबंध नहीं रहता। लेकिन इन दोनों ने तो उसी समय से टैगोर, शरदचंद्र आदि के साहित्य को उलटना-पुलटना शुरू कर दिया था।

‘चित्रांगदा’ कच-देवयानी की कथा पर टैगोर द्वारा रचित ‘विदाई का अभिशाप’ शीर्षक नाटिका, ‘शरद बाबू की कहानियाँ’ आदि अनुवाद उस समय की उनकी साहित्यिक गतिविधियों की देन हैं। लेखक कहता है कि भारत में महादेव के अक्षरों का कोई मुकाबला नहीं कर सकता था, कोई भी महादेव की तरह सुन्दर लिखावट में नहीं लिख सकता था।

यहाँ तक कि वाइसराय के नाम जाने वाले गांधीजी के पत्र हमेशा महादेव की लिखावट में जाते थे। उन पत्रों को देख-देखकर दिल्ली और शिमला में बैठे वाईस रॉय भी ईर्ष्या के शिकार होते थे। भले ही उन दिनों भारत पर ब्रिटिश सल्तनत की पूरी हुकूमत थी,

लेकिन उस सल्तनत के ‘छोटे’ बादशाह को भी गांधीजी के सेक्रेटरी यानि महादेव के समान सुन्दर अक्षर लिखने वाला लेखक कहाँ मिलता था? बड़े-बड़े सिविलियन और गवर्नर कहा करते थे कि सारी ब्रिटिश सर्विसों में

महादेव के समान अक्षर लिखने वाला कहीं खोजने पर भी मिलता नहीं था। लेखक कहता है कि महादेव का शुद्ध और सुंदर लेखन पढ़ने वाले को मंत्रमुग्ध कर देता था।

पाठ – महादेव के हाथों के लिखे गए लेख, टिप्पणियाँ, पत्र, गांधीजी के व्याख्यान, प्रार्थना-प्रवचन, मुलाकातें, वार्तालापों पर लिखी गई टिप्पणियाँ, सब कुछ फुलस्केप चौथाई आकारवाली मोटी अभ्यास पुस्तकों में, लंबी लिखावट के साथ, जेट की सी गति से लिखा जाता था। वे 'शॉर्टहैंड' जानते नहीं थे।

बड़े-बड़े देशी-विदेशी राजपुरुष, राजनीतिज्ञ, देश-विदेश के अग्रगण्य समाचार-पत्रों के प्रतिनिधि, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के संचालक, पादरी, ग्रंथकार आदि गांधीजी से मिलने के लिए आते थे। ये लोग खुद या इनके साथी-संगी भी गांधीजी के साथ बातचीत को 'शॉर्टहैंड' में लिखा करते थे।

महादेव एक कोने में बैठे-बैठे अपनी लम्बी लिखावट में सारी चर्चा को लिखते रहते थे। मुलाकात के लिए आए हुए लोग अपनी मुकाम पर जाकर सारी बातचीत को टाइप करके जब उसे गांधीजी के पास 'ओके' करवाने के लिए पहुँचते, तो भले ही उनमें कुछ भूलें या कमियाँ-खामियाँ मिल जाएँ, लेकिन महादेव की डायरी में या नोट-बही में मजाल है कि कॉमा मात्र की भी भूल मिल जाए।

शब्दार्थ

व्याख्यान – भाषण

फुलस्केप – कागज़ का एक आकार

चौथाई – चौथा भाग

व्याख्या – लेखक कहता है कि महादेव के हाथों के लिखे गए लेख, टिप्पणियाँ, पत्र, गांधीजी के भाषण, प्रार्थना-प्रवचन, मुलाकातें, वार्तालापों पर लिखी गई टिप्पणियाँ, सब कुछ कागज़ के एक आकार के चौथे भाग के आकार वाली मोटी अभ्यास पुस्तकों में, लंबी लिखावट के साथ, जेट की सी गति से लिखा जाता था। वे 'शॉर्टहैंड' नहीं जानते थे।

लेखक कहता है कि बड़े-बड़े देशी-विदेशी राजपुरुष, राजनीतिज्ञ, देश-विदेश के सबसे आगे रहने वाले समाचार-पत्रों के प्रतिनिधि, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के संचालक, पादरी, ग्रंथकार आदि गांधीजी से मिलने के लिए आते थे। ये लोग खुद या इनके साथी-संगी भी गांधीजी के साथ बातचीत को 'शॉर्टहैंड' में लिखा करते थे। क्योंकि पूरी की पूरी बातचीत को हु-ब-हु लिखना हर किसी के बस की बात नहीं। लेखक कहता है कि महादेव एक कोने में बैठे-बैठे अपनी लम्बी लिखावट में सारी चर्चा को लिखते रहते थे। महादेव जी का कार्य सम्पूर्ण रूप से निपुण होता था उनके कार्य में भूल का कोई स्थान नहीं होता था।

पाठ – गांधीजी कहते: महादेव के लिखे 'नोट' के साथ थोड़ा मिलान कर लेना था न। और लोग दाँतों अँगुली दबाकर रह जाते।

लुई फिशर और गुंथर के समान धुरंधर लेखक अपनी टिप्पणियों का मिलान महादेव की टिप्पणियों के साथ

करके उन्हें सुधारे बिना गांधीजी के पास ले जाने में हिचकिचाते थे।

साहित्यिक पुस्तकों की तरह ही महादेव वर्तमान राजनीतिक प्रवाहों और घटनाओं से संबंधित अद्यतन जानकारी वाली पुस्तकें भी पढ़ते रहते थे। हिंदुस्तान से संबंधित देश-विदेश की ताज़ी-से-ताज़ी राजनीतिक गतिविधियों और चर्चाओं की नयी-से-नयी जानकारी उनके पास मिल सकती थी।

सभाओं में, कमेटियों की बैठकों में या दौड़ती रेलगाड़ियों के डिब्बों में ऊपर की बर्थ पर बैठकर, ठूँस-ठूँसकर भरे अपने बड़े-बड़े झोलों में रखे ताज़े-से-ताज़े समाचार-पत्र, मासिक-पत्र और पुस्तकें वे पढ़ते रहते, अथवा 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' के लिए लेख लिखते रहते।

लगातार चलने वाली यात्राओं, हर स्टेशन पर दर्शनों के लिए इकट्ठा हुई जनता के विशाल समुदायों, सभाओं, मुलाकातों, बैठकों, चर्चाओं और बातचीतों के बीच वे स्वयं कब खाते, कब नहाते, कब सोते या कब अपनी हाज़तें रफ़ा करते, किसी को इसका कोई पता नहीं चल पाता। वे एक घंटे में चार घंटों के काम निपटा देते। काम में रात और दिन के बीच कोई फर्क शायद ही कभी रहता हो। वे सूत भी बहुत सुंदर कातते थे। अपनी इतनी सारी व्यस्तताओं के बीच भी वे कातना कभी चूकते नहीं थे।

व्याख्या – लेखक कहता है कि गांधीजी हमेशा मुलाकात के लिए आए हुए लोगों से कहते थे कि उन्हें अपना लेख तैयार करने से पहले महादेव के लिखे 'नोट' के साथ थोड़ा मिलान कर लेना था, इतना सुनते ही लोग दाँतों अँगुली दबाकर रह जाते थे।

लुई फिशर और गुंथर के समान उत्तम गुणों से युक्त लेखक अपनी टिप्पणियों का मिलान पहले महादेव की टिप्पणियों के साथ करके उन्हें सुधार लेते थे उसके बाद ही गांधीजी के पास ले जाते थे। लेखक कहता है कि साहित्यिक पुस्तकों की तरह ही महादेव वर्तमान राजनीतिक प्रवाहों और घटनाओं से संबंधित अब तक की जानकारी वाली पुस्तकें भी पढ़ते रहते थे।

हिंदुस्तान से संबंधित देश-विदेश की ताज़ी-से-ताज़ी राजनीतिक गतिविधियों और चर्चाओं की नयी-से-नयी जानकारी उनके पास मिल सकती थी। लेखक कहता है कि या तो महादेव सभाओं में, कमेटियों की बैठकों में या दौड़ती रेलगाड़ियों के डिब्बों में ऊपर की बर्थ पर बैठकर, ठूँस-ठूँसकर भरे अपने बड़े-बड़े झोलों में रखे ताज़े-से-ताज़े समाचार-पत्र, मासिक-पत्र और पुस्तकें पढ़ते रहते, अथवा 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' के लिए लेख लिखते रहते। लगातार चलने वाली यात्राओं, हर स्टेशन पर दर्शनों के लिए इकट्ठा हुई जनता के विशाल समुदायों, सभाओं, मुलाकातों, बैठकों, चर्चाओं और बातचीतों के बीच वे स्वयं कब खाते, कब नहाते, कब सोते या कब अपनी हाज़तें रफ़ा करते, किसी को इसका कोई पता नहीं चल पाता।

लेखक कहता है कि महादेव की एक खास बात यह थी कि वे एक घंटे में चार घंटों के काम निपटा देते थे। काम में रात और दिन के बीच कोई फर्क शायद ही कभी रहता हो। उनकी एक और खासियत यह थी कि वे सूत भी बहुत सुंदर कातते थे। अपनी इतनी सारी व्यस्तताओं के बीच भी वे कातना कभी चूकते नहीं थे। सूत कातने के लिए वे समय निकाल ही लेते थे।

पाठ – बिहार और उत्तर प्रदेश के हजारों मील लंबे मैदान गंगा, यमुना और दूसरी नदियों के परम उपकारी, सोने की कीमत वाले 'गाद' के बने हैं। आप सौ-सौ कोस चल लीजिए रास्ते में सुपारी फोड़ने लायक एक पत्थर भी कहीं मिलेगा नहीं।

इसी तरह महादेव के संपर्क में आने वाले किसी को भी ठेस या ठोकर की बात तो दूर रही, खुरदरी मिट्टी या कंकरी भी कभी चुभती नहीं थी। उनकी निर्मल प्रतिभा उनके संपर्क में आने वाले व्यक्ति को चंद्र-शुक्र की प्रभा के साथ दूधों नहला देती थी। उसमें सराबोर होने वाले के मन से उनकी इस मोहिनी का नशा कई-कई दिन तक उतरता न था।

महादेव का समूचा जीवन और उनके सारे कामकाज गांधीजी के साथ एकरूप होकर इस तरह गुँथ गए थे कि गांधीजी से अलग करके अकेले उनकी कोई कल्पना की ही नहीं जा सकती थी।

कामकाज की अनवरत व्यस्तताओं के बीच कोई कल्पना भी न कर सके, इस तरह समय निकालकर लिखी गई दिन-प्रतिदिन की उनकी डायरी की वे अनगिनत अभ्यास पुस्तके, आज भी मौजूद हैं।

शब्दार्थ

गाद – गाढ़ी चीज़, कीचड़

सराबोर – डूबा हुआ

अनवरत – लगातार

अनगिनत – जिसे गिना न जा सके

व्याख्या – लेखक कहता है कि जिस तरह बिहार और उत्तर प्रदेश के हजारों मील लंबे मैदान गंगा, यमुना और दूसरी नदियों के परम उपकारी, सोने की कीमत वाले कीचड़ के बने हैं। यदि कोई इन मैदानों के किनारे सौ-सौ कोस भी चल लेगा तो भी रास्ते में सुपारी फोड़ने लायक एक पत्थर भी कहीं नहीं मिलेगा।

इसी तरह महादेव के संपर्क में आने वाले किसी भी व्यक्ति को ठेस या ठोकर की बात तो दूर रही, खुरदरी मिट्टी या कंकरी भी कभी नहीं चुभती थी, यह उनके कोमल स्वभाव का ही परिणाम था। लेखक कहता है कि महादेव जी के स्वभाव के कारण उनसे मिलने वाले व्यक्ति उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाते थे।

लेखक कहता है कि उनके स्वाभाव प्रभावित हुए व्यक्ति कई दिनों तक उनके बारे में ही बातें करते रहते थे।

महादेव का पूरा जीवन और उनके सारे कामकाज गांधीजी के साथ इस तरह से मिल गए थे कि गांधीजी से अलग करके अकेले उनकी कोई कल्पना ही नहीं की जा सकती थी।

महादेव और गांधीजी इस तरह हो गए थे जैसे सिक्के के दो पहलु। कामकाज की लगातार व्यस्त रहते हुए भी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता, कि वे किस तरह समय निकालकर वे अपनी डायरी लिखते थे। दिन-प्रतिदिन की उनकी डायरी की वे अनगिनत अभ्यास पुस्तके आज भी मौजूद हैं।

पाठ – प्रथम श्रेणी की शिष्ट, संस्कार-संपन्न भाषा और मनोहारी लेखनशैली की ईश्वरीय देन महादेव को मिली थी। यद्यपि गांधीजी के पास पहुँचने के बाद घमासान लड़ाइयों, आंदोलनों और समाचार-पत्रों की चर्चाओं के

भीड़-भरे प्रसंगों के बीच केवल साहित्यिक गतिविधियों के लिए उन्हें कभी समय नहीं मिला, फिर भी गांधीजी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' का अंग्रेज़ी अनुवाद उन्होंने किया, जो 'नवजीवन' में प्रकाशित होनेवाले मूल गुजराती की तरह हर हफ़्ते 'यंग इंडिया' में छपता रहा। बाद में पुस्तक के रूप में उसके अनगिनत संस्करण सारी दुनिया के देशों में प्रकाशित हुए और बिके।

व्याख्या – लेखक कहता है कि प्रथम श्रेणी की शिष्ट, संस्कार से संपन्न भाषा और मन को लुभाने वाली लेखनशैली महादेव को ईश्वर की अहम कृपा से मिली थी। यद्यपि गांधीजी के पास पहुँचने के बाद घमासान लड़ाइयों, आंदोलनों और समाचार-पत्रों की चर्चाओं के भीड़-भरे प्रसंगों के बीच केवल साहित्यिक गतिविधियों के लिए उन्हें कभी समय नहीं मिला, फिर भी गांधीजी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' का अंग्रेज़ी अनुवाद उन्होंने किया, जो 'नवजीवन' में प्रकाशित होने वाले मूल गुजराती की तरह हर हफ़्ते 'यंग इंडिया' में छपता रहा। लेखक कहता है कि लेख की तरह छपने के बाद, पुस्तक के रूप में उसके अनगिनत संस्करण सारी दुनिया के देशों में प्रकाशित हुए और बिके।

पाठ – सन् 1934-35 में गांधीजी वर्धा के महिला आश्रम में और मगनवाड़ी में रहने के बाद अचानक मगनवाड़ी से चलकर से गाँव की सरहद पर एक पेड़ के नीचे जा बैठे। उसके बाद वहाँ एक-दो झोंपड़े बने और फिर धीरे-धीरे मकान बनकर तैयार हुए, तब तक महादेव भाई दुर्गा बहन और चि. नारायण के साथ मगनवाड़ी में रहे। वहीं से वे वर्धा की असह्य गरमी में रोज़ सुबह पैदल चलकर सेवाग्राम पहुँचते थे। वहाँ दिनभर काम करके शाम को वापस पैदल आते थे। जाते-आते पूरे 11 मील चलते थे। रोज़-रोज़का यह सिलसिला लंबे समय तक चला। कुल मिलाकर इसका जो प्रतिकूल प्रभाव पड़ा, उनकी अकाल मृत्यु के कारणों में वह एक कारण माना जा सकता है।

इस मौत का घाव गांधीजी के दिल में उनके जीते जी बना ही रहा। वे भर्तृहरि के भजन की यह पंक्ति हमेशा दोहराते रहे:

'ए रे जखम जोगे नहि जशे'- यह घाव कभी योग से भरेगा नहीं।

बाद के सालों में प्यारेलाल जी से कुछ कहना होता, और गांधीजी उनको बुलाते तो उस समय भी अनायास उनके मुँह से 'महादेव' ही निकलता।

शब्दार्थ

असह्य – सहन न की जाने वाली

सिलसिला – क्रम

अनायास – अचानक

व्याख्या – लेखक कहता है कि सन् 1934-35 में गांधीजी वर्धा के महिला आश्रम में और मगनवाड़ी में रहने के बाद अचानक मगनवाड़ी से चलकर सेगाँव की सरहद पर लगे एक पेड़ के नीचे जा बैठे। उसके बाद वहाँ एक-दो झोंपड़े बने और फिर धीरे-धीरे मकान बनकर तैयार हुए, जब तक यह काम हो रहा था तब तक महादेव भाई,

दुर्गा बहन और चि. नारायण के साथ मगनवाड़ी में ही रहे।

वहीं से वे वर्धा की सहन न की जाने वाली गर्मी में रोज़ सुबह पैदल चलकर सेवाग्राम पहुँचते थे। वहाँ दिनभर काम करके शाम को वापस पैदल आते थे। लेखक कहता है कि वे लोग हर रोज जाते-आते पूरे 11 मील चलते थे। रोज़-रोज़का यह क्रम लंबे समय तक चला।

कुल मिलाकर इसका जो प्रतिकूल प्रभाव पड़ा, उनकी बिना समय की मृत्यु के कारणों में वह एक कारण माना जा सकता है। लेखक कहता है कि महादेव की मौत का घाव गांधीजी के दिल में उनके जीते जी बना ही रहा। वे भर्तृहरि के भजन की यह पंक्ति हमेशा दोहराते रहे: 'ए रे जखम जोगे नहि जशे'- यह घाव कभी योग से भरेगा नहीं।

बहुत सालों के बाद भी जब गांधीजी को प्यारेलाल जी से कुछ कहना होता, और गांधीजी उनको बुलाते तो उस समय भी अचानक उनके मुँह से 'महादेव' ही निकलता।

बहु विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1 – आकाश के तारों में सबसे अनोखा तारा किसे कहा गया है?

- (A) मंगल
- (B) शुक्र
- (C) चन्द्रमा
- (D) ध्रुव

उत्तर-(B) शुक्र

प्रश्न 2 – शुक्र तारे को किस का साथी माना गया है?

- (A) मंगल
- (B) सूर्य
- (C) चन्द्रमा
- (D) सांय काल का

उत्तर-(C) चन्द्रमा

प्रश्न 3 – शुक्र तारे की तरह चमकदार किसे कहा गया है?

- (A) महादेव को
- (B) गांधीजी को
- (C) लेखक को
- (D) इनमें से किसी को नहीं

उत्तर-(A) महादेव को

प्रश्न 4 – मित्रों के बीच मज़ाक में अपने को गांधीजी का कुली कहने में और कभी-कभी अपना परिचय उनके खाना पकाने वाले, मशक से पानी ढोने वाले व्यक्ति अथवा गधे के रूप में देने में भी वे गौरव का अनुभव किया करते थे।

- (A) कुली
- (B) खाना पकाने वाला
- (C) मशक से पानी ढोने वाला व्यक्ति
- (D) उपरोक्त सभी

उत्तर-(D) उपरोक्त सभी

प्रश्न 5 – गांधीजी अपने लेख कहाँ लिखा करते थे?

- (A) दा हिन्दू
- (B) ट्रिब्यून
- (C) बाम्बे क्रानिकल
- (D) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(C) बाम्बे क्रानिकल

प्रश्न 6 – ‘क्रानिकल’ के निडर अंग्रेज़ संपादक हार्नीमैन को सरकार ने देश-निकाले की सज़ा देकर इंग्लैंड क्यों भेज दिया?

- (A) क्योंकि वे सुस्त थे
- (B) अपना काम निष्ठा से नहीं करते थे
- (C) निडरता से अपना कर्तव्य निभाते थे
- (D) गद्दारी करते हुए पकड़े गए थे

उत्तर-(C) निडरता से अपना कर्तव्य निभाते थे

प्रश्न 7 – गांधीजी की प्रतिदिन की गतिविधियों पर कौन नज़र बनाए रखते थे?

- (A) महादेव
- (B) शंकर लाल बैंकर
- (C) लेखक
- (D) उम्मर सोबानी

उत्तर-(A) महादेव

प्रश्न 8 – महादेव के घनिष्ठ मित्र कौन थे?

- (A) लेखक
- (B) गांधीजी
- (C) सम्पादक
- (D) नरहरि भाई

उत्तर-(D) नरहरि भाई

प्रश्न 9 – नरहरि भाई और महादेव ने साथ-साथ किसकी पढ़ाई की थी?

- (A) सम्पादकीय
- (B) वकालत
- (C) स्नाकोत्तर
- (D) हिंदी-अनुवाद

उत्तर-(B) वकालत

प्रश्न 10 – महादेव का किस चीज़ में कोई मुकाबला नहीं कर सकता था?

- (A) बोलने में
- (B) काम करने में
- (C) लिखावट में
- (D) चलने में

उत्तर-(C) लिखावट में

प्रश्न 11 – महादेव की खास बात क्या थी?

- (A) काम को समय पर पूरा करना
- (B) शुक्रबोलने से पहले काम करना
- (C) चार घंटे के काम को एक घंटे में निपटना
- (D) चार घंटे के काम को दो घंटे में निपटना

उत्तर-(C) चार घंटे के काम को एक घंटे में निपटना

प्रश्न 12 – महादेव के व्यवहार को कैसा कहा गया है?

- (A) शक्र और चन्द्रमा की चमक के सामान
- (B) शक्र की चमक के सामान
- (C) चन्द्रमा की चमक के सामान
- (D) ध्रुव की चमक के सामान

उत्तर-(A) शक्र और चन्द्रमा की चमक के सामान

प्रश्न 13 – गांधीजी की आत्मकथा का क्या नाम है?

- (A) सत्य का प्रकाश
- (B) सत्य का प्रयोग
- (C) सत्य-वचन
- (D) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(B) सत्य का प्रयोग

प्रश्न 14 – महादेव ने गांधीजी की आत्मकथा का कौन सी भाषा में अनुवाद किया?

- (A) हिंदी
- (B) गुजराती
- (C) मलयालम
- (D) अंग्रेजी

उत्तर-(D) अंग्रेजी

प्रश्न 15 – सन् 1934-35 में गांधीजी कहाँ रहने लगे?

- (A) वर्धा के महिला आश्रम
- (B) मगनवाड़ी
- (C) सेगाँव
- (D) गुजरात

उत्तर-(C) सेगाँव

प्रश्न 16 – महादेव भाई, दुर्गा बहन और चि. नारायण रोज कितना पैदल चलते थे?

- (A) 11 मील
- (B) 10 मील

(C) 12 मील

(D) 9 मी

उत्तर-(A) 11 मील

प्रश्न 17 – महादेव की मृत्यु का एक बड़ा कारण क्या माना जाता है?

(A) 11 मील रोज़ पैदल चलना

(B) कठिन काम करना

(C) जी-तोड़ मेहनत करना

(D) चार घंटे का काम एक घंटे में करना

उत्तर-(A) 11 मील रोज़ पैदल चलना

प्रश्न 18 – गांधीजी को किसकी मौत का सदमा लगा था?

(A) महादेव

(B) लेखक

(C) प्यारेलाल

(D) सम्पादक मित्र

उत्तर-(A) महादेव

प्रश्न 19 – महादेव की मृत्यु के बाद भी गाँधीजी किसके नाम की जगह उनका नाम पुकारते थे?

(A) महादेव

(B) लेखक

(C) प्यारेलाल

(D) सम्पादक मित्र

उत्तर-(C) प्यारेलाल

प्रश्न 20 – ‘ए रे जखम जोगे नहि जशे’- यह घाव कभी योग से भरेगा नहीं ये किसकी पंक्तियाँ हैं?

(A) दण्डी

(B) माघ

(C) कबीर

(D) भर्तृहरि

उत्तर-(D) भर्तृहरि

सारांश

लेखक परिचय

लेखक – स्वामी आनंद

जन्म – 1887

शुक्रतारे के समान पाठ प्रवेश

प्रस्तुत पाठ 'शुक्रतारे के समान' में लेखक ने गांधीजी के निजी सचिव महादेव भाई देसाई की बेजोड़ प्रतिभा और व्यस्ततम दिनचर्या को उकेरा है। लेखक अपने इस रेखाचित्र के नायक के व्यक्तित्व और उसकी ऊर्जा, उनकी लगन और प्रतिभा से अभिभूत है। लेखक के अनुसार कोई भी महान व्यक्ति, महानतम कार्य तभी कर पाता है, जब उसके साथ ऐसे सहयोगी हों जो उसकी तमाम चिंताओं और उलझनों को अपने सिर ले लें। गांधीजी के लिए महादेव भाई और भाई प्यारेलाल जी ऐसी ही शख्सियत थे।

शुक्रतारे के समान पाठ सार

लेखक कहता है कि आकाश के तारों में शुक्र का कोई जोड़ नहीं है कहने का तात्पर्य यह है कि शुक्र तारा सबसे अनोखा है। भाई महादेव जी आधुनिक भारत की स्वतंत्रता के उषा काल में अपनी वैसी ही चमक से हमारे आकाश को जगमगाकर, देश और दुनिया को मुग्ध करके, शुक्र तारे की तरह ही अचानक अस्त हो गए अर्थात् उनका निधन हो गया। लेखक यह भी कहता है

कि सेवा-धर्म का पालन करने के लिए इस धरती पर जन्मे स्वर्गीय महादेव देसाई गांधीजी के मंत्री थे। गांधीजी के लिए महादेव पुत्र से भी अधिक थे। लेखक कहता है कि सन् 1919 में जलियाँवाला बाग के हत्याकांड के दिनों में पंजाब जाते हुए गांधीजी को पलवल स्टेशन पर गिरफ़्तार किया गया था। गांधीजी ने उसी समय महादेव भाई को अपना वारिस कहा था।

लाहौर के मुख्य राष्ट्रीय अंग्रेज़ी दैनिक पत्र 'ट्रिब्यून' के संपादक श्री कालीनाथ राय को 10 साल की जेल की सज़ा मिली। लेखक कहता है कि गांधीजी के सामने जुल्मों और अत्याचारों की कहानियाँ पेश करने के लिए आने वाले पीड़ितों के दल-के-दल गामदेवी के मणिभवन पर इकट्ठे आते रहते थे। महादेव उनकी बातों को विस्तार से सुनकर छोटे रूप में तैयार करके उनको गांधीजी के सामने पेश करते थे और आने वालों के साथ गांधीजी की आमने-सामने मुलाकातें भी करवाते थे।

लेखक कहता है कि शंकर लाल बैकर, उम्मर सोबानी और जमनादास द्वारकादास उन दिनों बंबई के तीन नए नेता थे। इनमें अंतिम जमनादास द्वारकादास श्रीमती बेसेंट के अनुयायी थे। ये नेता 'यंग इंडिया' नाम का एक

अंग्रेज़ी पत्रिका भी निकालते थे। ये पत्रिका सप्ताह में एक बार निकाली जाती थी।

शंकर लाल बैकर, उम्मर सोबानी और जमनादास द्वारकादास तीनों नेता गांधीजी को बहुत मानते थे और उनके सत्याग्रह-आंदोलन में मुंबई के बेजोड़ नेता भी थे। जो पूरे आंदोलन के दौरान गांधीजी के साथ ही रहे। इन्होंने गांधीजी से विनती की कि वे 'यंग इंडिया' के संपादक बन जाएँ। गांधीजी को तो इसकी सख्त ज़रूरत थी ही। उन्होंने विनती तुरंत स्वीकार कर ली।

लेखक कहता है कि गांधीजी का काम इतना बढ़ गया कि साप्ताहिक पत्र भी कम पड़ने लगा। लेखक कहता है कि गांधीजी और महादेव का सारा समय देश घूमने में बीतने लगा। गांधीजी और महादेव जहाँ भी होते, वहाँ से कामों और कार्यक्रमों की भारी भीड़ के बीच भी समय निकालकर लेख लिखते और भेजते थे। लेखक कहता है कि, भरपूर चैकसाई, ऊँचे-से-ऊँचे ब्रिटिश समाचार-पत्रों की परंपराओं को अपनाकर चलने का गांधीजी का आग्रह और कट्टर से कट्टर विरोधियों के साथ भी पूरी-पूरी सत्यनिष्ठा में से उत्पन्न होने वाली विनय-विवेक-युक्त विवाद करने की गांधीजी की शिक्षा इन सब गुणों ने तीव्र मतभेदों और विरोधी प्रचार के बीच भी देश-विदेश के सारे समाचार-पत्रों की दुनिया में और एंग्लो-इंडियन समाचार-पत्रों के बीच भी व्यक्तिगत रूप से महादेव को सबका लाड़ला बना दिया था।

क्योंकि महादेव ने सभी कामों को बड़े सही ढंग से सम्भाल रखा था।

लेखक कहता है कि भारत में महादेव के अक्षरों का कोई सानी नहीं था, कोई भी महादेव की तरह सुन्दर लिखावट में नहीं लिख सकता था। यहाँ तक कि वाइसराय के नाम जाने वाले गांधीजी के पत्र हमेशा महादेव की लिखावट में जाते थे। उन पत्रों को देख-देखकर दिल्ली और शिमला में बैठे वाइसराय लंबी साँस-उसाँस लेते रहते थे।

भले ही उन दिनों भारत पर ब्रिटिश सल्तनत की पूरी हुकूमत थी, लेकिन उस सल्तनत के 'छोटे' बादशाह को भी गाँधीजी के सेक्रेटरी यानि महादेव के समान सुन्दर अक्षर लिखने वाला लेखक कहाँ मिलता था? बड़े-बड़े सिविलियन और गवर्नर कहा करते थे कि सारी ब्रिटिश सर्विसों में महादेव के समान अक्षर लिखने वाला कहीं खोजने पर भी मिलता नहीं था। लेखक कहता है कि महादेव का शुद्ध और सुंदर लेखन पढ़ने वाले को मंत्र मुग्ध कर देता था।

लेखक कहता है कि महादेव एक कोने में बैठे-बैठे अपनी लम्बी लिखावट में सारी चर्चा को लिखते रहते थे।

मुलाकात के लिए आए हुए लोग अपनी मंज़िल पर जाकर सारी बातचीत को टाइप करके जब उसे गाँधीजी के पास 'ओके' करवाने के लिए पहुँचते, तो भले ही उनमें कुछ भूलें या कमियाँ-खामियाँ मिल जाएँ, लेकिन महादेव की डायरी में या नोट-बही में कोई भी गलती नहीं होती थी यहाँ तक कि कॉमा मात्र की भी भूल नहीं मिलती थी।

लेखक कहता है कि गाँधीजी हमेशा मुलाकात के लिए आए हुए लोगों से कहते थे कि उन्हें अपना लेख तैयार करने से पहले महादेव के लिखे 'नोट' के साथ थोड़ा मिलान कर लेना था, इतना सुनते ही लोग दाँतों अँगुली दबाकर रह जाते थे। लेखक कहता है कि जिस तरह बिहार और उत्तर प्रदेश के हजारों मील लंबे मैदान गंगा, यमुना और दूसरी नदियों के परम उपकारी, सोने की कीमत वाले कीचड़ के बने हैं।

यदि कोई इन मैदानों के किनारे सौ-सौ कोस भी चल लेगा तो भी रास्ते में सुपारी फोड़ने लायक एक पत्थर भी कहीं नहीं मिलेगा। इसी तरह महादेव के संपर्क में आने वाले किसी भी व्यक्ति को ठेस या ठोकर की बात तो दूर

रही, खुरदरी मिट्टी या कंकरी भी कभी नहीं चुभती थी, यह उनके कोमल स्वभाव का ही परिणाम था। लेखक कहता है कि उनका यह स्वच्छ स्वभाव उनके संपर्क में आने वाले व्यक्ति को चन्द्रमा और शुक्र की चमक की तरह मानो दूध से नहला देती थी।

लेखक कहता है कि उनके स्वाभाव में डूबने वाले के मन से उनकी इस मोहिनी का नशा कई-कई दिन तक नहीं उतरता था। महादेव का पूरा जीवन और उनके सारे कामकाज गांधीजी के साथ इस तरह से मिल गए थे कि गांधीजी से अलग करके अकेले उनकी कोई कल्पना ही नहीं की जा सकती थी। लेखक कहता है कि सन् 1934-35 में गांधीजी वर्धा के महिला आश्रम में और मगनवाड़ी में रहने के बाद अचानक मगनवाड़ी से चलकर सेगाँव की सरहद पर लगे एक पेड़ के नीचे जा बैठे।

उसके बाद वहाँ एक-दो झोंपड़े बने और फिर धीरे-धीरे मकान बनकर तैयार हुए, जब तक यह काम हो रहा था तब तक महादेव भाई, दुर्गा बहन और चि. नारायण के साथ मगनवाड़ी में ही रहे। वहीं से वे वर्धा की सहन न की जाने वाली गर्मी में रोज़ सुबह पैदल चलकर सेवाग्राम पहुँचते थे। वहाँ दिनभर काम करके शाम को वापस पैदल आते थे।

लेखक कहता है कि वे लोग हर रोज़ जाते-आते पूरे 11 मील चलते थे। रोज़-रोज़का यह क्रम लंबे समय तक चला। कुल मिलाकर इसका जो प्रतिकूल प्रभाव पड़ा, उनकी बिना समय की मृत्यु के कारणों में वह एक कारण माना जा सकता है। लेखक कहता है कि महादेव की मौत का घाव गांधीजी के दिल में उनके जीते जी बना ही रहा।

वे भर्तृहरि के भजन की यह पंक्ति हमेशा दोहराते रहे: 'ए रे ज़ख्म जोगे नहि जशे'- यह घाव कभी योग से भरेगा नहीं। बहुत सालों के बाद भी जब गांधीजी को प्यारेलाल जी से कुछ कहना होता, तो उस समय भी अचानक उनके मुँह से 'महादेव' ही निकलता।

हिंदी

कक्षा IX

अध्याय 6- रैदास के पद

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) पहले पद में भगवान और भक्त की जिन-जिन चीजों से तुलना की गई है, उनका उल्लेख कीजिए।

(ख) पहले पद की प्रत्येक पंक्ति के अंत में तुकांत शब्दों के प्रयोग से नाद-सौंदर्य आ गया है, जैसे- पानी, समानी आदि। इस पद में से अन्य तुकांत शब्द छाँटकर लिखिए।

(ग) पहले पद में कुछ शब्द अर्थ की दृष्टि से परस्पर संबद्ध हैं। ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखिए-

(घ) दूसरे पद में कवि ने 'गरीब निवाजु' किसे कहा है? स्पष्ट कीजिए।

(ङ) दूसरे पद की 'जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(च) 'रैदास' ने अपने स्वामी को किन-किन नामों से पुकारा है?

(छ) निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए-

मोरा, चंद, बाती जोति, बरै, राती, छत्रु, धरै, छोति, तुहीं, गुसईआ

उत्तर-

(क) पहले पद में भगवान और भक्त की निम्नलिखित चीजों से तुलना की गई है-

1. भगवान की चंदन से और भक्त की पानी से।
2. भगवान की घन बन से और भक्त की मोर से।
3. भगवान की चाँद से और भक्त की चकोर से
4. भगवान की दीपक से और भक्त की बाती से
5. भगवान की मोती से और भक्त की धागे से।
6. भगवान की सुहागे से और भक्त को सोने से।

(ख) अन्य तुकांत शब्द इस प्रकार हैं

1. मोरा – चकोरा
2. बाती – राती
3. धागा – सुहागा
4. दासा – रैदासा

अध्याय 6- रैदास के पद

(ग)

1. चंदन – बास
2. घन बन – मोर
3. चंद – चकोर
4. मोती – धागा
5. सोना – सुहागा
6. स्वामी – दास

(घ) दूसरे पद में कवि ने अपने प्रभु को 'गरीब निवाजु' कहा है। इसका अर्थ है-दीन-दुखियों पर दया करने वाला। प्रभु ने रैदास जैसे अछूत माने जाने वाले प्राणी को संत की पदवी प्रदान की। रैदास जन-जन के पूज्य बने। उन्हें महान संतों जैसा सम्मान मिला। रैदास की दृष्टि में यह उनके प्रभु की दीन-दयालुता और अपार कृपा ही है।

(ङ) इसका आशय है-रैदास अछूत माने जाते थे। वे जाति से चमार थे। इसलिए लोग उनके छूने में भी दोष मानते थे। फिर भी प्रभु उन पर द्रवित हो गए। उन्होंने उन्हें महान संत बना दिया।

(च) रैदास ने अपने स्वामी को 'लाल', गरीब निवाजु, गुसईआ, गोबिंदु आदि नामों से पुकारा है।

(छ)

प्रयुक्त रूप	प्रचलित रूप
--------------	-------------

- | | |
|-----------|-------------|
| 1. मोरा | मोर |
| 2. चंद | चाँद |
| 3. बाती | बत्ती |
| 4. जोति | ज्योति |
| 5. बरै | जलै |
| 6. राती | रात्रि, रात |
| 7. छत्रु | छत्र, छाता |
| 8. धरै | धारण करे |
| 9. छोति | छूते |
| 10. तुहीं | तुम्हीं |
| 11. गुसईआ | गोसाईं। |

अध्याय 6- रैदास के पद

प्रश्न 2. नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) जाकी अँग-अँग बास समानी

(ख) जैसे चितवत चंद चकोरा

(ग) जाकी जोति बरै दिन राती

(घ) ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै

(ङ) नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै

उत्तर-

(क) भाव यह है कि कवि रैदास अपने प्रभु से अनन्य भक्ति करते हैं। वे अपने आराध्य प्रभु से अपना संबंध विभिन्न रूपों में जोड़कर उनके प्रति अनन्य भक्ति प्रकट करते हैं। रैदास अपने प्रभु को चंदन और खुद को पानी बताकर उनसे घनिष्ठ संबंध जोड़ते हैं। जिस तरह चंदन और पानी से बना लेप अपनी महक बिखेरता है उसी प्रकार प्रभु भक्ति और प्रभु कृपा के कारण रैदास का तन-मन सुगंध से भर उठा है जिसकी महक अंग-अंग को महसूस हो रही है।

(ख) भाव यह है कि रैदास अपने आराध्य प्रभु से अनन्य भक्ति करते हैं। वे अपने प्रभु के दर्शन पाकर प्रसन्न होते हैं। प्रभु-दर्शन से उनकी आँखें तृप्त नहीं होती हैं। वे कहते हैं कि जिस प्रकार चकोर पक्षी चंद्रमा को निहारता रहता है। उसी प्रकार वे भी अपने आराध्य का दर्शनकर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।

(ग) भाव यह है कि अपने आराध्य प्रभु से अनन्यभक्ति एवं प्रेम करने वाला कवि अपने प्रभु को दीपक और खुद को उसकी बाती मानता है। जिस प्रकार दीपक और बाती प्रकाश फैलाते हैं उसी प्रकार कवि अपने मन में प्रभु भक्ति की ज्योति जलाए रखना चाहता है।

(घ) प्रभु की दयालुता, उदारता और गरीबों से विशेष प्रेम करने के विषय में कवि बताता है कि हमारे समाज में अस्पृश्यता के कारण जिन्हें कुछ लोग छूना भी पसंद नहीं करते हैं, उन पर दयालु प्रभु असीम कृपा करता है। प्रभु जैसी कृपा उन पर कोई नहीं करता है। प्रभु कृपा से अछूत समझे जाने वाले लोग भी आदर के पात्र बन जाते हैं।

(ङ) संत रैदास के प्रभु अत्यंत दयालु हैं। समाज के दीन-हीन और गरीब लोगों पर उनका प्रभु विशेष दया दृष्टि रखता है। प्रभु की दया पाकर नीच व्यक्ति भी ऊँचा बन जाता है। ऐसे व्यक्ति को समाज में किसी का डर नहीं रह जाता है। अर्थात् प्रभु की कृपा पाने के बाद नीचा समझा जाने वाला व्यक्ति भी ऊँचा और निर्भय हो जाता है।

अध्याय 6- रैदास के पद

प्रश्न 3.रैदास के इन पदों का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर-पहले पद का केंद्रीय भाव यह है कि राम नाम की रट अब छूट नहीं सकती। रैदास ने राम नाम को अपने अंग-अंग में समा लिया है। वह उनका अनन्य भक्त बन चुका है।

दूसरे पद का केंद्रीय भाव यह है कि प्रभु दीन दयालु हैं, कृपालु हैं, सर्वसमर्थ हैं तथा निडर हैं। वे अपनी कृपा से नीच को उच्च बना सकते हैं। वे उद्धारकर्ता हैं।

योग्यता विस्तार

प्रश्न 1.भक्त कवि कबीर, गुरु नानक, नामदेव और मीराबाई की रचनाओं का संकलन कीजिए।

उत्तर-छात्र इन कवियों की रचनाओं का संकलन स्वयं करें।

प्रश्न 2.पाठ में आए दोनों पदों को याद कीजिए और कक्षा में गाकर सुनाइए।

उत्तर-छात्र दोनों पदों को स्वयं याद करें और कक्षा में गाकर सुनाएँ।

अन्य पाठेतर हल प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1.रैदास को किसके नाम की रट लगी है? वह उस आदत को क्यों नहीं छोड़ पा रहे हैं?

उत्तर-रैदास को राम के नाम की रट लगी है। वह इस आदत को इसलिए नहीं छोड़ पा रहे हैं, क्योंकि वे अपने आराध्य प्रभु के साथ मिलकर उसी तरह एकाकार हो गए हैं; जैसे-चंदन और पानी मिलकर एक-दूसरे के पूरक हो जाते हैं।

प्रश्न 2. जाकी अंग-अंग वास समानी' में जाकी' किसके लिए प्रयुक्त है? इससे कवि को क्या अभिप्राय है?

उत्तर- 'जाकी अंग-अंग वास समानी' में 'जाकी' शब्द चंदन के लिए प्रयुक्त है। इससे कवि का अभिप्राय है जिस प्रकार चंदन में पानी मिलाने पर इसकी महक फैल जाती है, उसी प्रकार प्रभु की भक्ति का आनंद कवि के अंग-अंग में समाया हुआ है।

प्रश्न 3. 'तुम घन बन हम मोरा'-ऐसी कवि ने क्यों कहा है?

उत्तर- रैदास अपने प्रभु के अनन्य भक्त हैं, जिन्हें अपने आराध्य को देखने से असीम खुशी मिलती है। कवि ने ऐसा इसलिए कहा है, क्योंकि जिस प्रकार वन में रहने वाला मोर आसमान में घिरे बादलों को देख प्रसन्न हो जाता है, उसी प्रकार कवि भी अपने आराध्य को देखकर प्रसन्न होता है।

प्रश्न 4. 'जैसे चितवत चंद चकोरा' के माध्यम से रैदास ने क्या कहना चाहा है?

उत्तर- 'जैसे चितवत चंद चकोरा' के माध्यम से रैदास ने यह कहना चाहा है कि जिस प्रकार रात भर चाँद को देखने के बाद भी चकोर के नेत्र अतृप्त रह जाते हैं, उसी प्रकार कवि रैदास के नैन भी निरंतर प्रभु को देखने के बाद भी प्यासे रह जाते हैं।

प्रश्न 5. रैदास द्वारा रचित 'अब कैसे छूटे राम नाम रट लागी' को प्रतिपाद्य लिखिए।

उत्तर- रैदास द्वारा रचित 'अब कैसे छूटे राम नाम रट लागी' में अपने आराध्य के नाम की रट की आदत न छोड़ पाने के माध्यम से कवि ने अपनी अटूट एवं अनन्य भक्ति भावना प्रकट की है। इसके अलावा उसने चंदन-पानी, दीपक-बाती आदि अनेक उदाहरणों द्वारा उनका सान्निध्य पाने तथा अपने स्वामी के प्रति दास्य भक्ति की स्वीकारोक्ति की है।

प्रश्न 6. रैदास ने अपने 'लाल' की किन-किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर- रैदास ने अपने 'लाल' की विशेषता बताते हुए उन्हें गरीब नवाजु दीन-दयालु और गरीबों का उद्धारक बताया है। कवि के लाल नीची जातिवालों पर कृपाकर उन्हें ऊँचा स्थान देते हैं तथा अछूत समझे जाने वालों का उद्धार करते हैं।

प्रश्न 7. कवि रैदास ने किन-किन संतों का उल्लेख अपने काव्य में किया है और क्यों?

उत्तर-कवि रैदास ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैन का उल्लेख अपने काव्य में किया है। इसके उल्लेख के माध्यम से कवि यह बताना चाहता है कि उसके प्रभु गरीबों के उद्धारक हैं। उन्होंने गरीबों और कमजोर लोगों पर कृपा करके समाज में ऊँचा स्थान दिलाया है।

प्रश्न 8. कवि ने गरीब निवाजु किसे कहा है और क्यों ?

उत्तर-कवि ने गरीब निवाजु अपने आराध्य प्रभु को कहा है, क्योंकि उन्होंने गरीबों और कमजोर समझे जानेवाले और अछूत कहलाने वालों का उद्धार किया है। इससे इन लोगों को समाज में मान-सम्मान और ऊँचा स्थान मिल सकी है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. पठित पद के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि रैदास की उनके प्रभु के साथ अटूट संबंध हैं।

उत्तर-पठित पद से ज्ञात होता है कि रैदास को अपने प्रभु के नाम की रट लग गई है जो अब छुट नहीं सकती है। इसके अलावा कवि ने अपने प्रभु को चंदन, बादल, चाँद, मोती और सोने के समान बताते हुए स्वयं को पानी, मोर, चकोर धाग और सुहागे के समान बताया है। इन रूपों में वह अपने प्रभु के साथ एकाकार हो गया है। इसके साथ कवि रैदास अपने प्रभु को स्वामी मानकर उनकी भक्ति करते हैं। इस तरह उनका अपने प्रभु के साथ अटूट संबंध है।

प्रश्न 2. कवि रैदास ने 'हरिजीउ' किसे कहा है? काव्यांश के आधार पर 'हरिजीउ' की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर-कवि रैदास ने 'हरिजीउ' कहकर अपने आराध्य प्रभु को संबोधित किया है। कवि का मानना है कि उनके हरिजीउ के बिना माज के कमजोर समझे जाने को कृपा, स्नेह और प्यार कर ही नहीं सकता है। ऐसी कृपा करने वाला कोई और नहीं हो सकता। समाज के अछूत समझे जाने वाले, नीच कहलाने वालों को ऊँचा स्थान और मान-सम्मान दिलाने का काम कवि के 'हरिजीउ' ही कर सकते हैं। उसके 'हरिजीउ' की कृपा से सारे कार्य पूरे हो जाते हैं।

प्रश्न 3.रैदास द्वारा रचित दूसरे पद 'ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै' को प्रतिपाद्य लिखिए।

उत्तर-कवि रैदास द्वारा रचित इस पद्य में उनके आराध्य की दयालुता और दीन-दुखियों के प्रति विशेष प्रेम का वर्णन है। कवि का प्रभु गरीबों से जैसा प्रेम करता है, वैसा कोई और नहीं। वह गरीबों के माथे पर राजाओं-सा छत्र धराता है तो अछूत समझे जाने वाले वर्ग पर भी कृपा करता है। वह नीच समझे जाने वालों पर कृपा कर ऊँचा बनाता है। उसने अनेक गरीबों का उद्धार कर यह दर्शा दिया है कि उसकी कृपा से सभी कार्य सफल हो जाते हैं।

रैदास के पद पाठ व्याख्या

पद – 1

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।

प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा ॥

शब्दार्थ –

बास – गंध, वास

समानी – समाना (सुगंध का बस जाना), बसा हुआ (समाहित)

घन – बादल

मोरा – मोर, मयूर

चितवत – देखना, निरखना

चकोर – तीतर की जाति का एक पक्षी जो चंद्रमा का परम प्रेमी माना जाता है

बाती – बत्ती, रुई, जिसे तेल में डालकर दिया जलाते हैं

जोति – ज्योति, देवता के प्रीत्यर्थ जलाया जाने वाला दीपक

बरै – बढ़ाना, जलना

राती – रात्रि

सुहागा – सोने को शुद्ध करने के लिए प्रयोग में आने वाला क्षारद्रव्य

दासा – दास, सेवक

व्याख्या – इस पद में कवि ने भक्त की उस अवस्था का वर्णन किया है जब भक्त पर अपने आराध्य की भक्ति का रंग पूरी तरह से चढ़ जाता है कवि के कहने का अभिप्राय है कि एक बार जब भगवान की भक्ति का रंग भक्त पर

अध्याय 6- रैदास के पद

चढ़ जाता है तो भक्त को भगवान् की भक्ति से दूर करना असंभव हो जाता है।

कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु! यदि तुम चंदन हो तो तुम्हारा भक्त पानी है। कवि कहता है कि जिस प्रकार चंदन की सुगंध पानी के बूँद-बूँद में समा जाती है उसी प्रकार प्रभु की भक्ति भक्त के अंग-अंग में समा जाती है।

कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु!

यदि तुम बादल हो तो तुम्हारा भक्त किसी मोर के समान है जो बादल को देखते ही नाचने लगता है। कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु यदि तुम चाँद हो तो तुम्हारा भक्त उस चकोर पक्षी की तरह है जो बिना अपनी पलकों को झपकाए चाँद को देखता रहता है।

कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु यदि तुम दीपक हो तो तुम्हारा भक्त उसकी बत्ती की तरह है जो दिन रात रोशनी देती रहती है। कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु! यदि तुम मोती हो तो तुम्हारा भक्त उस धागे के समान है जिसमें मोतियाँ पिरोई जाती हैं।

उसका असर ऐसा होता है जैसे सोने में सुहागा डाला गया हो अर्थात् उसकी सुंदरता और भी निखर जाती है। कवि रैदास अपने आराध्य के प्रति अपनी भक्ति को दर्शाते हुए कहते हैं कि हे मेरे प्रभु! यदि तुम स्वामी हो तो मैं आपका भक्त आपका दास यानि नौकर हूँ।

पद – 2

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।

गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै।।

जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै।

नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै॥

नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै।

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै॥

शब्दार्थ

लाल – स्वामी

कउनु – कौन

गरीब निवाजु – दीन-दुखियों पर दया करने वाला

गुसईआ – स्वामी, गुसाई

माथै छत्रु धरै – मस्तक पर मुकुट धारण करने वाला

छोति – छुआछूत, अस्पृश्यता

जगत कउ लागै – संसार के लोगों को लगती है

ता पर तुहीं ढरै – उन पर द्रवित होता है

अध्याय 6- रैदास के पद

नीचहु ऊच करै – नीच को भी ऊँची पदवी प्रदान करता है

नामदेव – महाराष्ट्र के एक प्रसिद्ध संत, इन्होंने मराठी और हिंदी दोनों भाषाओं में रचना की है

तिलोचनु (त्रिलोचन) – एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य, जो ज्ञानदेव और नामदेव के गुरु थे

सधना – एक उच्च कोटि के संत जो नामदेव के समकालीन माने जाते हैं

सैनु – ये भी एक प्रसिद्ध संत हैं, आदि 'गुरुग्रंथ साहब' में संगृहीत पद के आधार पर इन्हें रामानंद का समकालीन माना जाता है

हरिजीउ – हरि जी से

सभै सरै – सब कुछ संभव हो जाता है

व्याख्या – इस पद में कवि भगवान की महिमा का बखान कर रहे हैं। कवि कहते हैं कि हे! मेरे स्वामी तुझ बिना मेरा कौन है अर्थात् कवि अपने आराध्य को ही अपना सबकुछ मानते हैं। कवि भगवान की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं कि भगवान गरीबों और दीन-दुःखियों पर दया करने वाले हैं, उनके माथे पर सजा हुआ मुकुट उनकी शोभा को बढ़ा रहा है। कवि कहते हैं कि भगवान में इतनी शक्ति है कि वे कुछ भी कर सकते हैं और उनके बिना कुछ भी संभव नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि भगवान् की इच्छा के बिना दुनिया में कोई भी कार्य संभव नहीं है। कवि कहते हैं कि भगवान के छूने से अछूत मनुष्यों का भी कल्याण हो जाता है क्योंकि भगवान अपने प्रताप से किसी नीच जाति के मनुष्य को भी ऊँचा बना सकते हैं अर्थात् भगवान् मनुष्यों के द्वारा किए गए कर्मों को देखते हैं न कि किसी मनुष्य की जाति को। कवि उदाहरण देते हुए कहते हैं कि जिस भगवान ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैनु जैसे संतों का उद्धार किया था वही बाकी लोगों का भी उद्धार करेंगे। कवि कहते हैं कि हे !सज्जन व्यक्तियों तुम सब सुनो, उस हरि के द्वारा इस संसार में सब कुछ संभव है।

बहु विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1 – यदि भगवान चंदन है तो भक्त क्या है?

(ए) पानी

(बी) मोर

(सी) चॉकलेट

(डी) मोर

उत्तर-(ए) पानी

प्रश्न 2 – यदि भगवान भगवान है तो भक्त क्या है?

(ए) पानी

(बी) मोर

(सी) चॉकलेट

(डी) मोर

उत्तर-(बी) मोर

प्रश्न 3 – यदि भगवान चाँद हैं तो भक्त क्या हैं?

- (ए) पानी
- (बी) मोर
- (सी) चॉकलेट
- (डी) मोर

उत्तर-(सी) चॉकलेट

प्रश्न 4 – यदि भगवान दीपक है तो भक्त क्या है?

- (ए) पानी
- (बी) मोर
- (सी) चॉकलेट
- (डी) मोर

उत्तर-(डी) मोर

प्रश्न 5 – यदि भगवान मोती है तो भक्त क्या है?

- (ए) पानी
- (बी) मोर
- (सी) धुआं
- (डी) मोर

उत्तर-(सी) धुआं

प्रश्न 6 – यदि भगवान स्वामी है तो भक्त क्या है?

- (ए) दास
- (बी) मोर
- (सी) चकोर
- (डी) फूल

उत्तर-(ए) दास

प्रश्न 7 – भगवान के आभूषण पर क्या शोभा दे रही है?

- (ए) पानी
- (बी) पंख
- (सी) पंख
- (डी) पंख

उत्तर-(बी) पंख

प्रश्न 8 – भगवान किसका कल्याण बिना भेदभाव के करते हैं?

- (ए) अमीरों का
- (बी) अमीरों का
- (सी) अमीरों का
- (डी) इनसे किसी का नहीं

उत्तर-(सी) अमीरों का

प्रश्न 9 – कवि किसे अपनी पत्नी चाहिए?

- (ए) भगवान को
- (बी) संतों को
- (सी) वास्तुशिल्प को
- (डी) भक्तों को

उत्तर-(ए) भगवान को

प्रश्न 10 – दूसरे पद में कवि ने किसका गुणगान किया है?

- (ए) भगवान
- (बी) साधु
- (सी) साधु
- (डी) भक्त

उत्तर-(ए) भगवान

सारांश

कवि परिचय

कवि – रैदास

जन्म – 1388

रैदास के पद पाठ प्रवेश

यहाँ रैदास के दो पद लिए गए हैं। पहले पद 'प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी' में कवि अपने आराध्य को याद करते हुए उनसे अपनी तुलना करता है। पहले पद में कवि ने भगवान् की तुलना चंदन, बादल, चाँद, मोती, दीपक से और भक्त की तुलना पानी, मोर, चकोर, धागा, बाती से की है।

उसका प्रभु बाहर कहीं किसी मंदिर या मस्जिद में नहीं विराजता अर्थात् कवि कहता है कि उनके आराध्य प्रभु किसी मंदिर या मस्जिद में नहीं रहता बल्कि कवि का प्रभु अपने अंतः में सदा विद्यमान रहता है।

यही नहीं, कवि का आराध्य प्रभु हर हाल में, हर काल में उससे श्रेष्ठ और सर्वगुण संपन्न है। इसीलिए तो कवि को उन जैसा बनने की प्रेरणा मिलती है।

दूसरे पद में भगवान की अपार उदारता, कृपा और उनके समदर्शी स्वभाव का वर्णन है। रैदास कहते हैं कि भगवान ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैनु जैसे निम्न कुल के भक्तों को भी सहज-भाव से अपनाया है और उन्हें लोक में सम्माननीय स्थान दिया है।

कहने का तात्पर्य यह है कि भगवान् ने कभी किसी के साथ कोई भेद-भाव नहीं किया। दूसरे पद में कवि ने भगवान को गरीबों और दीन-दुःखियों पर दया करने वाला कहा है। रैदास ने अपने स्वामी को गुसईआ (गोसाई) और गरीब निवाजु (गरीबों का उद्धार करने वाला) पुकारा है।

रैदास के पद

रैदास के पद पाठ सार

- यहाँ पर रैदास के दो पद लिए गए हैं। पहले पद में कवि ने भक्त की उस अवस्था का वर्णन किया है जब भक्त पर अपने आराध्य की भक्ति का रंग पूरी तरह से चढ़ जाता है कवि के कहने का अभिप्राय है कि एक बार जब भगवान की भक्ति का रंग भक्त पर चढ़ जाता है तो भक्त को भगवान् की भक्ति से दूर करना असंभव हो जाता है। कवि कहता है कि यदि प्रभु चंदन है तो भक्त पानी है।
- जिस प्रकार चंदन की सुगंध पानी के बूँद-बूँद में समा जाती है उसी प्रकार प्रभु की भक्ति भक्त के अंग-अंग में समा जाती है। यदि प्रभु बादल है तो भक्त मोर के समान है जो बादल को देखते ही नाचने लगता है। यदि प्रभु चाँद है तो भक्त उस चकोर पक्षी की तरह है जो बिना अपनी पलकों को झपकाए चाँद को देखता रहता है।

अध्याय 6- रैदास के पद

यदि प्रभु दीपक है तो भक्त उसकी बत्ती की तरह है जो दिन रात रोशनी देती रहती है। कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु यदि तुम मोती हो तो तुम्हारा भक्त उस धागे के समान है जिसमें मोतियाँ पिरोई जाती हैं। उसका असर ऐसा होता है। यदि प्रभु स्वामी है तो कवि दास यानि नौकर है। दूसरे पद में कवि भगवान की महिमा का बखान कर रहे हैं।

कवि अपने आराध्य को ही अपना सबकुछ मानते हैं। कवि भगवान की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं कि भगवान गरीबों और दीन-दुःखियों पर दया करने वाले हैं, उनके माथे पर सजा हुआ मुकुट उनकी शोभा को बढ़ा रहा है। कवि कहते हैं कि भगवान में इतनी शक्ति है कि वे कुछ भी कर सकते हैं और उनके बिना कुछ भी संभव नहीं है।

भगवान के छूने से अछूत मनुष्यों का भी कल्याण हो जाता है क्योंकि भगवान अपने प्रताप से किसी नीच जाति के मनुष्य को भी ऊँचा बना सकते हैं। कवि उदाहरण देते हुए कहते हैं कि जिस भगवान ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैनु जैसे संतों का उद्धार किया था वही बाकी लोगों का भी उद्धार करेंगे। कवि कहते हैं कि हे सज्जन व्यक्तियों तुम सब सुनो उस हरि के द्वारा इस संसार में सब कुछ संभव है।